शेअरी मजमूआ

बयाज़े शाकि

की तबाअते दुव्व

IInd एडीशन

हिंदी

राज़ी होगा उनसे रब्बे कदीर
जिनको शैताँ से दुशमनी होगी

जुलमते जहल का दौर दौरा है
शमये इल्म जलाओ के रौशनी होगी

जिसको देखा, अपना नज़र आने लगा
मैं मुस्कुराया, आईना मुस्कराने लगा

शेख अहमद शाकिर कलमनूरी



जेरे सरपरस्ती

हज़रत मौलाना रियाजुद्दीन सहाब फारूकी नदवी दामत बरकातुहुम

नाज़िम जमिआ अरबिया काशिफुलउलूम
जामे मस्जिद औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

शेअरी मज़मूआ बयाज़े शाकेर (हिंदी एडीशन)

न. शु.	शब्दकोष	स. नं	न. शु.	शब्दकोष	स. नं
१	हम्दे बारी	१	२६	योमे आज़दी	२६
२	हम्दे बारी	२	२७	चाँद	२४
	हम्दे बारी	३	२८	मेहेरे ताबाँ	२९
३	हम्दे बारी	४	२९	गुलेमुतबस्सुम	३०
४	नात	५	३०	गुलाब	३१
५	आजमिने हज का	६	३१	शबनम	३२
	विदाई मंजर		३२	तितली	३३
६	नात		३३	दिल जलाव केह रोशनी होगी	३६
७	आर्जू	७	३४	जुगनू	३७
८	गज़ल	९	३५	बरसात	३९
९	गज़ल	१०	३६	धनक	४१
१०	गज़ल	११	३७	शजर कारी	४२
११	गज़ल	१२	३८	जनाब मौलवी सहाब	४३
१२	गज़ल	१३	३९	पिदरे मोहतरम	४४
१३	गज़ल	१४	४०	माँ की अज़मत	४५
१४	गज़ल	१५	४१	हुब्बे वतन	४७
१५	गज़ल	१६	४२	आँखे	५२
१६	गज़ल	१७	४३	सहेर खैज़ी	५५
१७	गज़ल	१८	४४	रुबाईयाते शाकिर	५६
१८	गज़ल	१९		रुबाईयाते शाकिर	५७
१९	गज़ल	२०		रुबाईयाते शाकिर	५८
२०	गज़ल	२१		शब्दकोष ५०,५१, ५३	
२१	गज़ल	२२		S1, T1, शब्दकोष	
२२	गज़ल	२३			
२३	मुतफ़र्रिक अशआर	२४			
२४	मुतफ़र्कि अशआर	२५			
२५	मुतफ़र्कि अशआर	२[illegible]			

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

शेअरी मज़मूआ बयाज़े शाकेर (हिंदी एडीशन)

न. शु.	शब्दकोष	स. नं	शब्दकोष
A	शब्दकोष	A1	पेशेलफ्ज़
B	शब्दकोष	B1	पेशेलफ्ज़
C	शब्दकोष	C1	पेशेलफ्ज़
D	शब्दकोष	D1	पेशेलफ्ज़
E	शे. अहमद शाकिर मेरी नजर मे	E1	अभिप्राय काझी सर
F	शब्दकोष	F1	अभिप्राय फ़िरोज़ रशीद साहब
G	शब्दकोष	G1	अरकाने एज़ाजी उर्दू वहिंदी एडीशन
H	शब्दकोष	H1	अभिप्राय मौ.मु. मुईनुद्दीन साहब
I	शब्दकोष	I1	मौ. मुफ्ती स. तमीजुद्दीन साहब
J	शब्दकोष	J1	मौ. मो. अय्यूब साहब कासमी
K	शब्दकोष	K1	मौ. मो. मसउदू रेहमान साहब फारुकी
L	शब्दकोष	L1	मौ. अ. वाहेद साहब कासमी
M	शब्दकोष	M1	मुफ़्ती मो. युसुफ़ साहब कासमी
N	शब्दकोष	N1	मो. कमालोद्दीन सिद्दीकी साहब
O	शब्दकोष	O1	मो. जुबेर अहमद साहब
P	शब्दकोष	P1	मो. जुबेर अहमद साहब
Q	शब्दकोष	Q1	दूआ
R	शब्दकोष	R1	शब्दकोष
S	शब्दकोष	S1	शब्दकोष
T	किताब के बारमे	T1	शब्दकोष
U	इन्तेसाब	U1	शब्दकोष
V	मजलिसे मुशाविर व	V1	ॲडस्
	इशाअत उर्दू एडीशन		
W	शब्दकोष	W1	ॲडस्
X	शब्दकोष	X1	ॲडस्
Y	मफहूमे कौले	Y1	ॲडस्
	बारीतआला व हदीस		
Z	पेशेलफ्ज़	Z1	ॲडस्

मजलिसे मुशाविरत (उर्दू एडीशन)

मौलाना मुजीबोद्दीन सहाब कासमी
जामे इस्लामिया काशिफुल उलूम जामा मस्जिद औरंगआबाद
मौलाना मुफ़ती तमीज़ोद्दीन सहाब कासमी पीर बुर्हाननगर, नांदेड.
मौलाना मुफ़ती युसुफ़ सहाब उसताज़े हदीस दारुलउलूम मोहम्मदिया हिमायतनगर.
हाजी अ. कादर सहाब (टाएर बोर्ड) रुकने मजलिसे इन्तेज़ामी दारुलउलूम करबला रोड, नांदेड
शेख़ अमजद सहाब सिद्दीक़ी खुसरु नगर नांदेड
डॉ. खुर्शीद अहमद सहाब (ख़मर हॉस्पिटल डॉ. लेन घामोडिया गार्डन के बाजू नांदेड)
मौलवी मसऊद अख़तर सहाब (लेक्चरार मदीनातुल उलूम हॉयस्कूल जु. कॉलेज, नांदेड.)
मो. मजीदुल्लाह सहाब (सुप्रिन्टेन्डेन्ट मदीनातुल उलूम हॉयस्कूल जु. कॉलेज नांदेड)
मो. मुहियोद्दीन सहाब (मुदर्रिस मदीनातुल उलूम हॉयस्कूल जु. कॉलेज, नांदेड.)

मजलिसे इशाअत उर्दू एडीशन

मौलाना मो. अय्यूब सहाब क़ासमी
सदर जमिय्यतुल उलमा शहेरे नांदेड एम.के. बुक हॉऊस (नई आबादी)
मौलना हाफ़ेज बिलाल अमीन सहाब बिलाल नगर नांदेड
डॉ. एन.क्यु. अन्सारी सहाब माहेरे इतफ़ाल अरब गल्ली नांदेड
अ. रऊफ़ सहाब मोमिन कंट्राक्टर B & C कॉलोनी नांदेड के पिछे
मो. मुशताक़ सहाब दुर्वेश गनीपूरा
मो. इद्रीस हुसेन सहाब अन्सारी किमीया ग्राफिक्स वजिराबाद, नांदेड.
कारी ज़हीरोद्दिन सहाब कुद्दुसी मुनतज़िम इदाराह मरकज़ुल उलूम
सय्यद अतहर सहाब अब्बासी टेलरिंग फ़र्म हताई करबला रोड, नांदेड.

दावचे ज़िक्र	अल्लाह की बंदगी और इबादत के लिए बुलाना, उसके आदेशों का पालन करने के लिए सब को आमादाह करना.
मनपसंद जिंदगी	जीवन का उद्देश, अच्छी जिंदगी
मेराजुन नबी (स.अ.स.)	अल्लाह ने नबी हज़रत मोहम्मद (अ.स.) को जिसम के सात आसमानों के उपर अर्श पर बुलाकर मुलाक़ात का मौक़ा दिया नमाज़ का तोहफ़ा दिया और वहाँ की सैर कराई.
अंजुम	तारे
कहेकशां	आकाश गंगा
मोनिस	मोहब्बत करने वाले, प्रेम करने वाले
ग़मगुसार	मुसिबत ज़दा को तसल्ली देने वाले.
उम्मत	नबी (स.अ.स.) के आदेश का पालन करने वालीजमात
मलूल	रंजिदा
हस्तीए मक़बूल	मशहूर हस्ती, पसंददीदा हस्ती
कममायगी	सलाहयत में कमी, बेसरो सामानी
सहाबा की अदाएँ	सहाबा के अख़लाक़, सु कर्म
सुबहान अल्लाह	अल्लाह पाक है
शान में उनके	उनके सम्मान में
आयातें	पवित्र क़ुरआन के वाक़िये
नुज़ुल	अल्लाह की तरफ़ से उतरना (क़ुरआन)

दिल जलाओ केह रोशनी होगी

लबेबाम	छत
नैरंगियाँ	बार बार रुप बदल कर अपनी सुंदरता ज़ाहेर करना
दआवते शीराज़	बढिया दआवत
बज़्मेरंगी	शादी की महफ़िल
बना	दुल्हा
बनी	दुल्हन
जुलमते जहल	जहालत का अंधेश
एतेराफे हक़	हकबात को मान्य करना
गुरेज़	इन्कार
सक़म	नक़्स
कजी	टेढापण
अफ़्रपफ़्री	इन्तशार
अबनाए आदम	आदम के बेटे, संसार के लोक

जुगनू

अशरार	चिंगार्याँ
रक़्सकरना	नाचना
काशाना	ठिकाना
सीमाब	पारा
चष्मवा	खुली आँख
माहपारे	चाँद के टुकडे
तक़्रीब	प्रोग्राम
सुरअत	तेज़ी
उफ़्क़े जहाँ पर	संसार पर
मंजरे हसीं	सुंदर देखावा
लुतफ़े दवाम	सदा का मज़ा
हुस्ने नज़र	अतिसुंदर

बरसात

बाद व बाराँ	बारिश
आशियाना	घोंस्ला
नायाब	ग़ायब, जोआसानी से मिल न सके
ताओस	मोर
सहेरा	जंगल
तयुर	पक्षी, पंछी
दहकाँ	किसान
शजर	पेड
हजर	पत्थर
चाह	तलब, मांग

धनक

बाराने रहेमत	रहेमत वाली बारिश, जिस से लाभ हो
सब्ज़ाज़ार	हरयाली
शुआए ख़ुर्शीद	सूरज की किरण
ख़न्दाजन	मुस्कराते हूए
मुक़ाबिल	सामने
फबन	सुंदरता
नज़ारा	देखावा
महेवे नज़ारा	देखने मे मगन
ज़ीनते फ़लक	आकाश की सुंदरता

शजरकारी

शजरकारी	पेडलगाना
राहत	ख़ुशी
आलूदगी	मिलावट
जरख़ेज़	अच्छी पैदावर देने वाली जमीन
क़ित्तए वीराँ	बंजर भाग, वह ज़मीन जिसमे पैदावार न होती हो

जनाब मौलवी साहब

तावीज़	गंडा
नवमौलूद	अभी पैदा हुआ बच्चा
रस्मे अक़ीक़ा	बच्चे की पैदायश के सातदिन बाद दआवत का प्रोग्राम
तसमिया ख़ानी	बिस्मिल्लाह पढानेकी रसम
दर्से मक्तब	मद्रसे मे छात्रो के पढाई का इंतेज़ाम
ख़ुत्बा	वअज़
इमामत	नमाज़ पढाना
ईमान	यक़ीन
क़रीबुलमर्ग	मरते वक़्त
वक़्ते नज़आ	सकरात, मौत की तकलीफ़
सुरे यासीन	पवित्र कुरआन की सूरत
ग़ुस्ले मय्यत	मुर्दे को नहलाना
फ़ातेहा देना	सवाब पहूँचाना
शादी व ग़म	ख़ुशी और ग़म के वक़्त
मुईन	मददगार

पिदरे मोहतरम

पिदरे मोहतरम	पिता
तनवीर	रोशनी, प्रकाश
मीनारे नूर	नूर, प्रकाश का मिनार जो सागर के किनार जहाज़ो को रास्ता बताता है.

शेख़ अहमद शाकिर कलमनुरवी

मेरी नज़र में

अज़ प्रो.डॉ. फ़हीम सिद्दीक़ी

मौलवी शेख़ अहमद शाकिर साहब का बहैसियत मददगार मुदर्रिस तकर्रुर मेने साथ ही मदीनतुल उलूम हायस्कूल में हुआथा वह ग़ालेबन १९७१ की बात है. मैं तब से इनको जानता हूँ निहायत मुख़लिस सादालोह इन्सान है. जिस काम के करने की दिल से ठान लेते हैं वहकाम मुकम्मल करके क ही दम लेते हैं एक अच्छे मुअल्लिम की हैसियत से मैं इनसे वाक़िफ़ था लेकिन इसके अलावा सहराये सखुन के रहेर व हैं इस बात का इल्म मुझे बयाज़े शाक़िर को देख कर हुआ जिसे वह अब हिंदी में शाय कर रहे हैं.

मानूस और जानी पहचानी वादीयों की सैर करना कोई खास क़ाबिल ज़िक्र बातनही गैर मानूस और अन्जान जज़ीरे की सय्याही का अज़्म करना वाकई बडी हिम्मत का काम है इस एतेबार से अगर देखा जाए तो शेख अहमद शाकिर मेरी नज़र में काबिले सद तहसीन हैं केह उन्होने एक ऐसी वादीसफ़र आग़ाज किया जिस वादी की राह के नशेभ व फराज़ से वह आगाह नहीं हैं. मैं इनके हौसले की दाद देता हूँ और अल्लाह तआ़ला से दुआ करता हूँ केह इनकी इस जेरे इशाअत तसनीफ़ से लोगो को सबक हासिल करने का मौक़ा मिले एक शेअर उनकी शखसियत की नज़र है.

बहुत ही सादा है तू और ज़माना अय्यार
ख़ुदा करे केह तुझे शहर की हवा न लगे

खैर अंदेश
प्रो. डॉ. फहीम अहमद सिद्दीक

गुले मुतबस्सुम

गुलेमुतस्सुम	मुस्कराता हुआ फूल
आर्ज़ू	उम्मीद
बर्ग	पत्ता, पान, पन्ना
शाख़े गुलशन	चमन की डाली
महताब	चाँद
पैवस्तारहना	जुडे रहना
तुख़्म	बीज
हयाते जावेदानी	हमेशा की जिंदगी
दआवते नज़्ज़ारगी देना	अपनी तरफ़ मायल करना

गुलाब (39)

सब्ज़	हरा
दोशीज़ा	नौजवान लडकी
परतव	छाया
शर्म से अर्करेज़ होना	शर्म से पानी पानी होना बहुत ज़्यादा शर्माना
दिल की पिन्हाइ यों जाग उठना	दिली जज़बात का भडकना
मिस्ले शमा	शमा की तऱ्हा
पैकरेजमाल	सुंदरता की देवी, मूर्ती
बाब	भाग, हिस्सा
तर्जुमान	तशरीह करना, समझाना
शबाब	जवानी
निशान	प्रतीक

गुलाब

हस्ती	जीवन
हस्ती मिस्ले गुबार होना	फ़ना होजाना, खत्म होजाना
तेरा तबस्सुम दआवते	फूल का मुस्कराना गोया उसकी इंतशार है गोया आर्ज़ी जिंगदी की तरफ़ इशारा करता है इसके बाद वह ख़त्म होजा एगा उसकी पयाँ बिखर कर हवा मे उडजाएंगी और फूल का वजूद ख़त्म होजा एगा

गोहरे अदन — अदन का मोती
हरसू — हर तरफ़
ख़स व ख़ाशाक — कचरा
पिन्हाइयों — गहराइयों
लबे साहेल — साहेल का किनारा
इस्तकलाल — किसीकाम पर जमे रहना
अहेल अज़म — बाहिम्मत लोग
शादाब — तर व ताज़ा
पहलूएगुल — फूल लगा हुआ
दाग़े इसयाँ — पापके धब्बे
बेहिसी — गफ़लत - आलस
पैहम — बारबार
रुतबावाला — ऊँचा मर्तबा

हुब्बेवतन

राएगाँ — बेकार
कोहसार — पहाड, पर्बत का सिल सिला
सीरत — खूबी
खसलत — आदत
रवादारी — सब धर्मिके मानने वालो के साथ या कसाँ बरताव करना
सानी — दुसरा
सदी — सौसाल
गेहवारा — झूला
बादेसबा — ठंडी हवा
सदा — आवाज़
रुह परवर — आत्मा को शांती देने वाली
दिल रुबा — दिल को लुभाने वाली
सरहद — सीमा
दर्ज करना — लिखाना
सेसिम्त — तीनो दिशाओं में
जानिबे शुमाल — उत्तर की ओर
गोहरे अदन — अदन का मोती
हरसू — हर तरफ़
ख़स व ख़ाशाक — कचरा
पिन्हाइयों — गहराइयों

ग़ज़ल

हमे रहे रेहके ख़ियाले यार बार बार आया

सद इफ़्तेक़ार	बुहूत ज़्यादा नाज़
माशूक़	जिससे मोहब्बत की जाती है.
शबे इंतेज़ार	इंतज़ार की रात
अद्ल	न्याय
मुस्तइद	सावधान
ख़ुमार	नशा
जामेइश्क़	मोहब्बत का जाम

ग़ज़ल

बर्क़ की चष्मकजनी सा है हिजाब उनका

बर्क़	बिजली
चष्मकज़नी	बिजली का बार बार चमकना
हिजाब	पर्दा
वजूद	हस्ती
पारे सिमाब	पारे का टुकडा
बज़्म	महेफ़िल
तबस्सुमरेज़	मुसकराहट बिखेरने वाली
शीरींकलाम्याँ	दिलको लुभाने वाली बात चीत
ख़िताब	बयान
महेव	मगन
ख़ुशअदाई	आकर्शक अदाकरी
शजर	पेड, झाड
हसीं	सुंदर
गुमान	ख़्याल
दहन	मूँह

चाँद

बदरे कामेल	चौधवी रात का चाँद
दरीचा	खिडकी

मेहरेताबाँ

मेहर	सूरज
ताबाँ	रोशन चमकदार
जलवाफ़गन	जलवा दिखाना, चमकना
मख़ज़न	खज़ाना
दवाँ	दौडताहुआ
ताबिंदा निशाँ	रोशान, चमकताहुआ प्रतिक

मज़हरे कुदरत

मुस्तइद	अपने फ़र्ज़ को पूरी तन्हा अदा करने वाला, तय्यार
बेलोस	अपने काम या खिदमत की उजरत ने लेने वाला
फैज़ेआम	आम जनता और संसार को फ़ायदा पहुंचाना
शीरीं समर	मीठे फल
बावफ़ा	वफ़ादार
मुती	आदेश का पालन करने वाला
नेकख़ू	अच्छे अख़लाक़ वाला
राज़े ज़िंदगी	जीवन का रहस्य

योमे आज़ादी

अहलेवतन	वतनवाले
जुरअतेमर्दाना	बाहादुरी
सरनिगू होना	हारना, झुकना
अन्जुम	तारे
गुंचा	कली
गुल	फूल

ग़ज़ल

हम किस तन्हा रहेंगे महेजूर होकर

महजूर	तन्हा, अकेला
चष्म	आँख
दीदार	मुलाक़ात
नमूदार	ज़ाहेर होना
सुरूर	ख़ुशी
तसलसुल	सिलसिला
मिस्ल	तन्हा
कलीम	पैगंबर हज़रत मूसाअलैहिस्स सलाम को अल्लाह ने अपनी तजल्ली पहाड कोहेतूर पर दिखलाई थी
कोह	पहाड, पर्बत
तेरे हुजूर	तेरे सामने (समक्ष)
शैतानी मोड़ लेना	बुराई व पाप की ओर चलना
रंगे आसमाँ बदलना	आसमान से आज़ाब उतरने के फ़ैसले होना. बरबादी के फैसले उतरना.
दारे फ़ानी	फ़ना व बरबाद होने वाली दुन्याँ
मुख़तेसर	थोडी
उमरे अज़ीज़	प्यारी जिंदगी

ग़ज़ल

एक छोटा सा दिल है..... मगर उछता ता जाता है.

आमद	आगमन, आना, पधारना
चष्मे करम	मोहब्बत व प्यार की नज़र
मरहूने मिन्नत	एहसानमंद, शुक्रगुज़ार
मिज़ाजे यार	दोस्त का मिज़ाज
यादें माज़ी	पिछली यादें
कुर्ब	नज़दीकी
बुअद	दूरी
ख़्याले यार	दोस्त का ख़्याल
रुख़े ज़ेबा	माशूक़ का चहेरा
अमले इन्सान	इंसान का अमल, बरताब

अभिप्राय

मो. मुफ़्ती मु. युसुफ साहेब कासमी

सिलसिल तुज़जदब	सोने की ज़ज़ीर
आम फ़हेम	आसान सहल

अभिप्राय

मु. कमालुद्दीन सिद्दीकी साहब साजिद

तआरुफ़	पहचान
ख़ाना आबादी	शादी
तहनियती	खुशीकी
शेअरी नशिस्त	मुशायरे का प्रोग्राम
राकेमुल हुरूफ़	लिखने वाले
पेशाए तद्रीस	बच्चों को पढाने या तालीम शिक्षा देने का पेशा
उजलत	जल्दी
अदम सहूलत	आसानी का ना होना
नक़्कादान अदब	अदबको जांचने और परखने वाले
अलालत	बीमारी
सिफ़त	खूबी, अच्छाई
ख़िदमते तद्रीस	पढाने की खिदमत
तबाआज़माई	लिखना
दादें	तारीफ़
मिस्दाक़	फ़िट
बेसाख़्ता	फौरन
मआज़िरत	क्षमा
शाएकरना	छापना
मुस्तफ़ीद होना	फ़ायदा, लाभ उठाना

अभिप्राय

अज़ मो. मुफ़्ती स. तमीज़ुद्दीन साहब

मुरत्तब फ़रमाना	तरतीब देना
दौरे पुरफ़तन	बुराज़माना
इफ़्कार	ख्यालात
उम्मत	लोक
दआवती अन्दाज	ऐसा ढंग जिसमे अच्छे काम की तरफ़ जन्ता को बुलाया गया हो
हुब्बुल वतनी	देश प्रेम
सहेर खैज़ी	सुबह जल्दी जागना
इन्शाअल्लाह	अल्लाह चाहे तो

लबे साहेल	सागर के क़िनारे
इस्तक़लाल	किसीकाम पर जमे रहना
अहले अज़्म	बाहिम्मत
शादाब	तर व ताज़ा
पहलूएगुल	फ़ूल से लगा हुआ
दाग़े इसयाँ	पापके धब्बे
बेहिसी	गफ़लत - आलस
पैहम	बारबार
रुतबावाला	ऊँचा मर्तबा

शबनम

इबादत	बंदगी
तसबीह	अल्लाह की पाकी बयान करना
इलतेज़ाम	इंतेज़ाम
तआकुबकरना	पीछा करना
चमन के मकीं	चमन मे रहने वाले
फ़य्याज़	फ़ायदा पहूंचाने वाली
पैग़ाम	संदेसा
हस्सास	जल्द असर लेनेवाला
नियमत	इनआम
मुफ़ीदुलअनाम	सबको फायदा पहूंचाने वाली

तितली

आशिक़ेगुल	फूलों की आशिक
हर लम्हा	हर घडी
कई रुख़	कई दिशा
वज़ूद	हस्ती
चष्मे क़दरदाँ	क़दर करने वाली आँख
मुनहनी	टेढी
अयाँ	ज़ाहेर
मशग़ला	काम
एक्तेसाबे गुलशन	चमन से फ़ायदा उठाना
ख़ोशाचीं	नियमतों से फ़ायदा उठावाला

आजमीन हज का विदाई मंजर

आज़मीने हज	हज को जाने का इरादा करनेवाले
दर्खास्त	विनंती, प्रार्थना
सरकार (स.अ.स.)	पैग़बर हज़रत मुहम्मद (स.अ.स.)
अनवार की बारीश	हरतरफ़ फ़िज़ा रोशन है
उश्शाक़	अल्लाह को दिल व जान से चाहनेवाले आशिक़ की जमा
हम्दका तराना	अल्लाह की तारीफ़ का गीत
मआमूर	फरिश्तों का काबा जो आस्मान पर है
मामूर	मुकर्रर, नियुक्त
जन्नते अर्ज़ी	इन्सानों का कआबा जो मक्का में है (जमीनपर)
तवाफ़	कआबे के ७ चक्कर लगाना (अतराफ़)
वालेहाना	मुहब्बत में चूर होकर
दर्देफ़िराक़	जुदाई की तकलीफ़
लातक़ नतू	पवित्र कुरआन की आयत यानी तुमनाउम्मीद मत हो
फ़साना	फ़र्ज़ी किस्सा
नूरे किबरिया	अल्लाह का नूर
फ़िरदोस	जन्नत, स्वर्ग
क़दर दाँ	क़दर करने वाला
बाग़े इरम	जन्नत, स्वर्ग
हातेम	सखी, दयाधर्म करने वाला
एकतेसाबे फ़ैज़ान करना	फ़ायदा उठाना
अम्न का क़ियाम करना	अम्न क़ायम करना
ख़ाने नियमत	लज़ीज़, स्वादिष्ट खानों का दस्तरखान
शुक्र	एहसान
मुदाम	सदा, हमेशा
जमाल	सुंदरता, ख़ूबसूरती
मिल्क	जायदाद, पूंजी
मुकल्लफ़	अल्लाह के आदेश व हुक्म का पाबंद
इफ़्फ़त	इज़्ज़त, आब्रू
पुख़्ता	मज़बूत
नज़्म	इन्तज़ाम
क़स्सामेअज़ल	अल्लाह तआला
क़स्साम	बाटनेवाला, तक़सीम करने वाला (अल्ला तआला)
बोरिया नशीं	गरीब, नादार, दीन
बेमहेल	बेजा, गैर मुनासिहब जगह
सुकूँ	समाधान
इताअत	आदेश का पालकरना
नाक़िस	अधूरा
रिसालत	पैग़बर हज़रत मुहम्मद (स.अ.स.) के नबी व रसूल होने का यकीन रखना ईमान लाना
ग़मे फ़िराक़	जुदाई का ग़म
इबारत है जिंदगी	जीवन क़ायम है

ग़ज़ल

जवानी की हर हसीं शाम व सहर होती है.

जाने शरर	सुलगती हुवी चिंगारी
अज़ायम की मेराज	ऊंचे इरादेह
बिदून हुक्म	अल्लाह के आदेश के बग़ैर
शम्स	सूरज
क़मर	चाँद

ग़ज़ल

जिक्रे सुबहान गर्दिशमें

हर लहेज़ा	हर आन
आफ़ाक़	आकाश, अंबर
हुजूम	गर्दी
खिजाँ	पतझड का मौसम
रहेमते सुबहान	अल्लाह की रहेमत
आबशार	धबधबे
माही	मछली
दर आब	पानी में
फ़लक	आसमान, आकाश
माहेताब	चाँद
आज़ाए बदन	बदन के भाग
जुस्तुजूए नातमाम	अधूरी कोशिश
साइंस का फ़ैज़ान	सांइस के फ़ायदे
साग़र	पैमाना
जाम	सुराही
मुदाम	लगातार

ग़ज़ल

तहरीर बदल सकती है तदबीर बदल सकती है.

तहेरीर	लिखावट
तदबीर	तरकीब
हुस्ने अमल	अच्छा अमल
तक़दीर	नसीब, मुक़द्दर
सिला रहेमी	रिश्तेदारों से अच्छा बरताव करना उनकी मददकरना, काम आना

नात	वह नज़्म जिसमे हज़रत मोहम्मद (स.अ.स.) की तारीफ़ की जाती है.
हम्दे सुबहान	अल्लाह की तारीफ़
ज़िक्रे रसूल (स.अ.स.)	रसूल (स.अ.स.) का ज़िक्र
तज़किरें	बयान, बातें
फुज़ूल	बेकार
बायस	वजाह, सबब
ज़र्री उसूल	सुनेहरा वुसूल
हुब्बे रसूल (स.अ.स.)	रसूल (स.अ.स.) की मोहब्बत
अहेले बदर व उहद	बदर और उहद वाले
मुक़ामे महेमुद	अल्लाह के पास सब से बडा मर्तबा मुक़ाम
इलाही	मेरे अल्लाह
रब	अल्लाह ताआला
हजरत हव्वा अलै. स.	हज़रत आदम अलै सलाम की पत्नी/बीबी
जोज़ै नबी	हज़रत आदम अलै स. की बीबी
येवज़	बदला
शुअबे जिंदगी	जीवन के भाग
रहेनुमा	नेता, पेशवा
हुस्ने अख़लाक़	अच्छे अख़लाक़
तूबा	स्वर्ग का एक पेड है बहोत बडा है इतना के अगर उसकी छाया मे एक तेज़रो घोडा दौडता रहे तो पांसो वर्ष तक उस की छाया ख़तम ना होगी.
बबूल	पैगंबर हज़रत मोहम्मद स.अ.स. के साथी (साहबा) जो इसलाम लाने से पहेले पेड बबूल की तराह मामुली थे लेकिन इसलाम लाने के बाद (मुसलमान) होने के बाद उनमे अच्छाई पैदा होगई जिस पर तूबा का पेड भी रश्क करने लगा.

हमदेबारी

हुस्न	सुंदरता
शिरीनी	मिठास
मख़लूक़	अल्लाह की पैदा की हूई चीज़ें
महकूम	आदेश का पालन करने वाला
ममनून	आभारी, शुक्रगुज़ार
आजिज़	लाचार, मजबूर
सना ख्वाँ	तआरीफ़ करने वाले, गुनगाने वाले

हम्देबारी

चमन की ज़ीनत	चमनकी ख़ूबसूरती
बहर	समंदर, सागर
तख़य्युले इन्साँ	इन्सान के सोचने की सलाहियत (क्षमता)
परवाज़	उडने की क़ुव्वत
उक़दये फ़ितरत	नैसर्गिक गुथथ्यों को खोलना
अहद शिकन	वचन को तोडने वाला
बेरूह	मुर्दार, बेजान
मशग़ूले इबादत	इबादत मे लगे हूए
मुर्ग़ाने चमन	चमन के पक्षी

हम्दे बारी

ज़ीस्त	जीवन
नफ़्स	आत्मा
तसर्रुफ़	एख़्तयार, अधिकार
मख़लूक़	अल्लाह की बनाई हुई सारी दुन्या व लोक
ज़ुर्रियत	संतान
ख़ैरुर्रा ज़िकीन	अच्छा खाना और ज़रुरत की सब चीज़ें देने वाला
नज़्मे जहाँ	संसार को चलाने का ढंग, इन्तेंजाम
रुरूबियत	संसार वासियों के पालन पोशन की क्षमता
आलेमुल ग़ैब	ग़ैब का हाल जानने वाला,
बहरे बेकराँ	ऐसा सागर जिसका कोई अंत ना हो
मेराज	प्रगती, उन्नती
रोज़े ज़ज़ा	बदले का दिन

बख़्श दे	क्षमा कर दे, माफ़करदे
रोज़े महेशर	अल्लाह के पास, सब के जमा होने का दिन

हम्द बारी

जहाँ	दुनियाँ
कायनात	संसार
नफ़्स	आत्मा
आदम (अ.स.)	पैगंबर हजरत आदम (अ.स.)
हव्वा अ.स.	आदम अ.स. की पत्नी, बीबी
हिदायत	सच्चा रास्ता सीधा रास्ता
शमये मुबीं	क़ुरआन पवित्र किताब जो हज़रत मोहम्मद (स.अ.स.) पर उतारी गई. (अल्लाह की तरफसे)
रज़ा	खुशी
बंदगी	प्रार्थना
शैताने लई	वह शैतान जिस पर सबकी धिक्कार और लआनत पडी
बख़्श देना	क्षमा कर देना, माफ़ करना

नात

शहे वाला मुक़ाम	ऊँचा मुक़ाम
मुहसिन	एहसान करने वाला
बख़्श देना	देदेना
करम फ़रमाई करना	मेहेरबानी करना
दौलते क़िनाअत पाना	थोडे पर राज़ी होना
महेबूब	पसंदीदा, प्रिया, प्यारा
तसाहूल	सुस्ती
गदाई	भीक मांगना
मातूब	सख़्त ना पसंद
हज़रत जिब्राईल	अल्लाह का बडा फ़रिश्ता (दूत)
तशरीफ़ लाना	पधारना, आना,
मामूर	पुर, भरी हूई
ज़ाते अक़दस	पैगंबर हज़रत मोहम्मद (स.अ.स.)

उम्मी	जिस ने इस संसार मे किसी से शिक्षण ना लिया हो, बल्के जिन्हे अल्लाह ने रास्त इल्म दिया था.
कामेल	परफेक्ट, मूकम्मल, पूरा
सानी	जवाब, मिसाल
जामेउल किलम	थोडे वाक्ये में पुरी बात समझा देना
क़ादिरुल कलाम	भाषा, कलाम पर पूरी क़ुदरत रखने वाला
ख़ैरुलमुबीं	खुली हुई, अच्छाई, भलाई
खैरुलबशर	प्रौषोत्तम, सब से अच्छे आदमी

ग़ज़ल

मैकश	पीने वाला
तिशना काम	प्यासा
मैख़ाना	संसार, दुन्यॉ
मुफ़ीद व आम	सबके लिए फ़ायदा पहोंचाने वाली

ग़ज़ल

फ़सले गुल	बहार का मौसम
रानाई	रौनक, ख़ूबसूरती
अदा	नाज़, नख़रे, मसीहाई
दिले मुश्ताक़	तडपने वाला दिल, बैचेन दिल
विसाल	मुलाक़ात, मिलाप
शबाब	जवानी
दरे गैर	बेगाने का घर, आस्ताना
गदाई	सवाल करना, मांगना

ग़ज़ल

सहर	सुबाह
शुगुफ़ता	खिला हुवा
माहेनीम	चौधवी का चाँद
जलवा गरी	चमकना, जलवा दिखाना
तआस्सुफ करना	अफ़सोस करना, रंज करना

नात

सगे दुनियाँ	दुनियाँ को चाहने वाला कुत्ता
मुखलिस	वफ़ादार
दर्दे उम्मत	उम्मत के दर्द व मुसीबत का एहसास और उस को दूर करने की कोशिश
फ़िक्रे रसूल	रसूल (स.अ.स.) के मिशन पर सब को चलाने की जदोजहेद और फ़िक्र
क़िसमत पे नाज़ाँ	मुक़द्दर पर फ़ख़र करना, नाज़ करना
नाज़ करना	फख़र करना
जबीने नियाज़ को	झुकने वाली पेशानी, माथा
आलुदाए ग़ुबार करना	सजदा करना, माथा जमीन पर टेकना
पेशानी	माथा
नियमत	इनाम
फ़ितरत	सृष्टी
रहे मंजिल	मंजिल को पहोंचने का रासता
हायेल होना	रुकावटबन्ना
रक़ीब	दुश्मन, शत्रु
सुपुर्दयार करना	अल्लाह के हवाले करना
फैज़	बरकत, लाभ
किर्दार	अख़लाक़
नक्षेकदम	पाँव के निशान, पैरवी करना, उनके रास्ते पे चलना
फिज़ाए मसमूम	जहरिली फ़िज़ा, बुरा माहोल
मुशकबार	सुगंधी
हासिल	मक़सद
मन्शाए यार	खुदा की मर्ज़ी पर

आरज़ू

आर्ज़ू	दिली तमन्ना
आस्तानाए यार	अल्लाह के दर पर
जबीं	पेशानी
उलफ़त	मोहब्बत, प्रेम

जुमलाह हुकूक महेफ़ूज़ हैं.

नाम किताब	शेयरी मजमुआ बयाज़े शाकिर
मुरत्तिब व शाओर	शेख अहेमद शाकिर कलमनुरी एम.ए.बी.एड. (सेवा निवृत अध्यापक) मदीनातुल उलूम हायर सेकंड्री स्कूलन, नांदेड. मो. ९३७१३३८७७४
तसीह	अ. क़ादर सहाब बैंदिल मरहूम व काज़ी लतीफुद्दीन सहाब दातार, हाफ़ेज़ हसन सहाब नांदेड और सय्यद साबेर सहाब बसमत नगर ए.एन. काझी साहब, फिरोज़ रशीद साहब, नांदेड.
कम्पोजिंग ॲन्ड डिज़ॉयनिंग	परफेक्ट ग्राफेक्स गुरुद्वारा चौरास्ता, देना बँक के पीछे नांदेड (महाराष्ट्र) मो. ९८२३२६२२२८, ९९७५८१३१६१
ऑफसेट प्रिंटींग	म. हारुन (वजाहत ऑफसेट) गुरुद्वारा चौरास्ता देना बँक के पीछे नांदेड (महाराष्ट्र) मो. ९८८१२९२३७७
	(इशाअते दुव्वम हिंदी ॲडिशन)
तादाद	एक हजार
किमत	५०/-
पत्ता	मकान नं. ९-२-३१९ निज़्द मस्जिदे हज़रत बिलाल (रजि.) मोहल्ला बिलाल नगर (पुराना पुल) नांदेड- ४३१६०४ (महाराष्ट्र)

इन्तेसाब

बयाज़े शाकिर का हिंदी एडीशन
पिदर मोहतरम और उनके
मुर्शिद
हज़रत काज़ी युसुफुद्दीन क़ुदुससिर्रुहू
केनाम

मजलिसे मुशाविरत शअरी मजमूआ

१) मो. मौलाना मुईनुद्दीन साहब कासमी मर्कजुल उलूम नांदेड.
२) आली जनाब प्रोफेसर कासिम साहब (उर्दू डिपार्टमेंट)
मौलानां आज़ाद कॉलेज, औरंगाबाद.
३) आली जनाब अ. हई साहब इंजिनियर सय्यदान, नांदेड.
४) आली जनाब अ. हमीद साहब (उर्फ पाशू नवाब)
५) आली जनाब मौलवी तनवीर अहमद खा साहब, पीर बुर्हान (र.) नांदेड.
६) आली जनाब म. हाजी साहब, बिलालनगर, नांदेड.
७) आली जनाब डॉ. मु. फ़ारुक साहब मेनन M.B.B.S., क़य्युम प्लॉट, नांदेड
८) आली जनाब अ. सत्तार साहब, चेअमर व नगरसेवक, बिलालनगर, नांदेड.
९) आली जनाब ए.एन. काज़ी सर, उमर कॉलनी, नांदेड.
१०) आली जनाब फ़िरोज खाँ रशीद साहब, कवि एवं मंच संचालक, नांदेड.
११) आली जनाब म. इद्रीस साहब आबासी,
(मुदर्रिस मदिनातुलउलूम हायर सेंकडरी, स्कूल, नांदेड.)
१२) आली जनाब अमजद खॉन साहब, सागर बॅटरी, नांदेड.
१३) मु. एजाज़ साहब D.T., मदीनतुल उलूम हायस्कूल, नांदेड.
१४) आली जनाब हकीम मु. जीलान्नी साहब, नई मस्जिद, नांदेड.

मजलिसे इशाअत बयाज़े शाकिर (हिंदी एडीशन)

१) आली जनाब मो. मौलाना मज़हर साहब, हिमायतनगर.
२) आली जनाब अ. कबीर साहब कंधारी,
पापुलर किराणा स्टोअर्स, मोंढा, नांदेड.
३) आली जनाब खलील अहेमद साहब कुरेशी, नांदेड.
४) आली जनाब अ. वहाब खाँ साहब शालीमार बेकरी,
हैद्राबाद रोड, धनेगांव, नांदेड.
५) आली जनाब अ. गफ़्फार साहब, चिकन सेंटर, चुना भट्टी, नांदेड.
६) आ.ज. अ. नईम साहब (अ. करीम ॲन्ड सन्स ट्रेडींग), देगलूर नाका, नांदेड.
७) आली जनाब सादेक सेट (सपान पेंटस), तुराब नगर, नांदेड.
८) आ.ज. मु. शमीम अब्दुलाह साहब (नगर सेवक) मदीना नगर, नांदेड.
९) आली जनाब शे. महमूद साहब, माडर्न ज्वेलर्स, बाग़बान गल्ली, नांदेड.
१०) आ.ज. बी. मुहम्मद फ़ारुक हुसेन साहब, सिंगार ज्वेलर्स, श्रीनगर, नांदेड.
११) आली जनाब मु. रफ़ीक साहब लब्बक क्लॉथ सेंटर, फत्तहजंग, नांदेड.
१२) आ.ज. म. ज़ूबेर अहमद साहब, (M.Sc. B.Ed.) मदीनतुल हायर सेंकडरी, नांदेड.
१३) आली जनाब शेख़ फ़ारुख़ साहब, सवेरा हॉटेल, नांदेड.

माँ की अजमत

तलाफ़ी	नुक्सान की भरपाई
तोबा	अपने पाप की माफी मागना और फिर से नकरने का इरादा करना
बचष्मेपुनम	शेतेहूए

हुब्बेवतन

निस्फ	आधा
सुए आस्माँ	आकाश की ओर
मसाई	कोशिशे

हुब्बेवतन

राएगाँ	बेकार
कोहसार	पहाड, पर्बत
सीरत	ख़ुबी
खसलत	आदत
रवादारी	
सानी	दुसरा
सदी	सौसाल
गेहवारा	झूला
बादेसबा	ठंडी हवा
सदा	आवाज़
रुह पर वर	आत्मा को शांती देने वाली
दिल रुबा	दिल को लुभाने वाली
सरहद	सीमा
दर्ज करना	लिखाना
सेसिम्त	तीनो दिशाओ में
जानिबे शुमाल	उत्तर को ओर

मफ़हूमे हदीस

रज़ाजोई	खुशनूदी, खुशकरने के लिए
सिलारहमी	रिश्ते दारों से अच्छा बरताव करना
सबक़त करना उमूर	काम बाजी लेजना

पेशेलफ़्ज

तकमील व तदवीन	पुरा करना
मराहेल तय होना	काम पूरा होना
तआरुफ़	पहचान
पेशेलफ़्ज	किताब लिखने वाले के हालात व ज़रुरी हालात
अहक़र	नाचीज़
तखल्लुस	वह छोटा नाम जो शायर अपनी शायरी मे इस्तेमाल करता है
तहसील	तालुका
खानवी तालीम	सेकंडरी एज्युकेशन
क़ाबिलियत	क्वालिफिकेशन
फ़रोग	तरक़्की उन्नती
जामेआ	युनिवरसिटी
मुअ़ल्लिम	अध्यापक
तकर्रुर	नियुक्ती
इदारा	संस्था
हाज़ा	यह
कदआवर शखसियत	मशहूर हस्ती
शुअल्ला बयान	जजबाती बयान करनेवाला भाषन करने वाला
मुकर्रिर	भाषन करने वाला।
वायज़	धार्मिक भाषन करने वाला
मजहबी रहनुमा	धार्मिक लीडर
रफ़ीके कार	एक साथ काम करने वाले
रफ़ीक	मित्र, दोस्त
दौराने मुलाज़िमत	नौकरी के दौरान
इसी असना मे	इसी दौरान
इजरा करना	जारी करना
खिदमत से बेदखल करना	नौकरी से निकाल देना
फ़रीक	पर्टि
फ़रीके सानी	दुसरे को

मफ़हूमे क़ौले बारी ताआला

बाहमी मशवेरों के आदाब यानी लोंगों के बाहीमी मशविरे और तदबिरें जो आख़ेरत की फ़िकर और अंजाम पर ग़ौर से आज़ाद होकर महेज़ चंद रोज़ा दीनी और दुन्यावी और बक़्ती मुनाफ़ा के लिए हुवा करते हैं इन मे कोई ख़ैर नही.

इन मशवरों और सर गोशियों में अगर कोई ख़ैर की चीज़ हो सकती है तो येह है केह एक दूसरे को सदक़ा ख़ैरात की तरग़ीब दें या नेकी का हुकुम करें या लोंगो के आपस में सुलाह कराने का मशवेरा दें.

मारेफ़ुल क़ुरआन जिल्द दुव्वम ५४५

मफ़हूमे हदीस

लोंगो एक दूसरे को कसरत से सलाम किया करो अल्लाह की रज़ा जोई के लिए लोगों को खाना खिलाया करो. सिलाह रहेमी किया करो और ऐसे वक़्त मे नमाज़ की तरफ़ सबक़त किया करो जबके आम लोग नींद के मज़े में हों.

याद रखो :

इन उमूर पर अमल करके तुम हिफ़ाज़त व सलामती के साथ बग़ैर रुकावट के जन्नत मे पहोंच जावगे.

(मारेफ़ुल क़ुरआन जिल्द दुव्वम सफा नं. २८१)

पेशे लफ्ज़

अलहमदु लिल्लाह बयाज़े शाकेर येह शेयरी मजमूआ जो आप के हात मे है इस की तकमील व तदवीन के मराहेल तय हुए तो इतमिनान की सांस ली मजकुराह बयाज़ के शायर यानी ख़ुद का मुख़्तेसर ताआरुफ़ करता चलूं.

अहेक़र का पूरा नाम शेख़ अहेमद वल्द शेख़ इमाम साहब और तख़ल्लुस शाकेर है वतन कलमनुरी जो पहेले (रियासत महाराष्ट्र) जि. परभणी का तालूका था लेकिन अब जि. हिंगोली की तहसील है. इबतेदाईतालीम वतन मे पाई सानवी ग्रेज़वेशन और पोस्ट ग्रेजवेशन की डिगरियाँ परभणी औरंगाबाद और भोपाल युनिवर सिटी के तालीमी इदारों से हासिल की गई तालीमी सलाहियत और क़ाबिलीयत के फ़रोग़ के लिए औरंगाबाद की सर जमीन ज़रख़ेज साबित हूई. १९६४ ई. में औरंगाबाद की जामा इस्लामिया काशिफ़ुल उलूम औरंगाबाद में बहैसीयत मौअल्लीम (असरी तालीम) तकर्रुर अमल में आया इदाराह हाज़ा के सरपरस्सते आला और मराठवाडा की क़द आवर शख़्सियत शोला बयान मुकर्रिर वायज़ मज़हबी रहेनुमा मरहूम सईद खाँ साहब और मौजूदाह नाजेमे आला मौलाना रियाज़ोद्दीन साहब फ़ारुक़ी नदवी दामत बरकातुहुम प्रो. क़ासिम साहब और उलमाए इक्राम की सोहबत हासिल रही. जुलाई १९६७ ई.मे. मोईनुल उलुम सिल्क मिल्ज़ प्रायमरी स्कूल मे बहैसियत मुदर्रिस तक़र्रुर अमल में आया.

दौराने मुलाज़िमत **P.G.** और **B.Ed.** के लिए रफ़ीक़े कार इफ़तेख़ार अली साहब मुकर्रम और मुबश्शिर हुसैन साहब फ़ारुक़ी का काफ़ी ताआउने अमल, रहेनुमाई और हौसला अफ़ज़ाई शामिल रही.

क़ियामे औरंगाबाद के जमाने ही में १९६९ ई. में **B.A.** की तकमील हुई १९७० ई. में नांदेड के मदीनातुल उलूम हाईस्कूल में बहैसियत मददगार मुदर्रिस तकर्रुर अमल मे आया दौराने मुलाज़ीमत भोपाल युनिवर सिटी के रिजनल कॉलेज ऑफ एज्युकेशन से १९७६ ई. में **B.Ed.**की डिग्री हासिल की और १९७९ ई. में मराठवाडा अंबेडकर युनिवरसिटी औरंगाबाद से उर्दू में पोस्ट ग्रेजवेशन **M.A.** किया

१९८७ ई.में इदाराह हाज़ा का पहेला उर्दु पोस्ट ग्रेज्युएट होने की वजाह से मदीना तुलउलूम हॉई स्कूल जुनियर कॉलेज नांदेड में बहैसियत उर्दू जुनियर लेकचरार तक़र्रूर अमल में आया इसी अस्ना में एक सावनेर बहारे नव को अपनी निगरानी मे इजरा करवाया जिस को काफ़ी मक़बुलीयत हासिल हूई और १७ सेप्टेंबर १९८८ को अचानक कॉलेज की ख़िदमत से बेदख़ल करक़े फ़रीके सानी को जगाह दी गई.

१९९९ ई. में हस्ब मामूल सुबुकदोषीके बाद मौलाना मोईनोद्दीन सहाब कासमी दामत बरकातुहूम मोहतेमिम इदाराह अरबिया मरकजुल उलूम ने बच्चों को असरी तालीम की पढाई के लिए एज़ाज़ी ख़िदमत पर फ़ायज़ किया साहेबेमौसूफ़ से रब्त व ताअलूक़ बहोत क़दीम है जबके आप जामे इस्लामिया काशिफ़ुल उलूम औरंगाबाद में सदरुल मुअल्लमीन थे (१९६५ ई.) येह बात क़ाबिले फ़ख़र व मसर्रत है कै फ़िर से उलुमाए इक्राम की सुहबत और मुस्तक़बिल के रौशन सितारे इन मासूम बच्चों की ख़िदमत का मौक़ा मिला.

अलहमदु लिल्लाह येह शेअरी मजमूआ बयाज़े शाक़ेर जो आप के ज़ेरे नज़र है तक़रीबन १५, २० साल पुराना सरमाया है. जो काफ़ी अर्से तक गौशय गुमनामी मे पडा हुवा था लेकिन क्या कहें तबियत ही कुछ ऐसी पाई है के केह शोर, शग़ाब, शोहरत और चर्चा को पसन्द नही करता इसी मिज़ाज ने शेअर व शाअेरी और अदबी महेफ़िलों से दूर रखा और ना अशआर रसाएल व अख़बारात की ज़ीनत बने. वैसे क़रीबी और रोज मर्राह मिलने जुलने वाले अहेबाब को सुनाने का मौक़ा मिला दौराने मुलाज़मत माहोल, अमल रद्दे अमल कशमकश तक़ाबुल और चोट ने फ़ने सखुन को जिला बख्शी, और वक़्तन फ़ौक़्तन अशआर नविश्तेदीवार बनतें गए.

शेअर मौजूं नही किए जाते बल्केह खुद बखुद मोजूं हो जातें है जिस तराह दीवार पर गेंद जितनी ताक़त व क़ुव्वत से दे मारी जाती है व उसी ताक़त व कुव्वत से वापस लौटती है इसी तराह तआस्सुर शेअर की सूरत मे अपना अक्स छोडता है.

वैसे शाएरी मुझे विरसे में नही मिली अलबत्ता दादा हज़रत के पास ज़ख़ीराह कुतुब मे दिवाने ग़ालीब देखी है वह अकसर अशआर वह लताएफ़ व चुटकुले सुना कर अहेबाब को महज़ूज़ किया करते थें. लेकिन येह तोहफ़ा वक़्त और माहोल की पैदावार है.

लौट पिछे की तरफ़ ऐ गर्दिशे अय्याम तू.................. हाँ याद आगया. मेरी उमर तकरीबन ८ साल होगी हम अपने खेत मे पहोंचे खूब खेले कूदे तफ़रीह की फ़ितरत के नज्ज़ारों का मुशाहेदा किया घास के तुर्रोंपर नज़र पडी तो फ़िलबदीह यह एक अजीब शेअर मौजूं होगया.

गाय दुम सिग्रेट
ऊपर गुलाबी नीचे सुफ़ेद

छोटे दादीजान ने काफ़ी दाद दी और सरहाया और खुशी का इज़हार किया दुसरों को इस की ख़बर दी और कहा अहेमद ने कितना अच्छा शेअर बनाया है येह चर्चा काफ़ी दिनों तक चलता रहा.

मजमूए हाज़ा मे जैसा के आप मुलाहेज़ा फ़रमाएंगे ख़ालिक़े कायनात अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की हम्द व सना से और मोहसिने इन्सानियत सरकारे दो आलम स.अ.स. की नाते पाक से शुरुवात की गई जो बायसे बरकत और रहेमत का ज़रिआ हैं फिर गज़ल्यात का सिलसिला है मुतफ़र्रिक़ अशार हैं इस के अलावाह यौमे आज़ादी और हुब्बे वतन पर लिखने की कोशिश की है. फिर मज़ाहेरे क़ुदरत, चाँद, सूरज, बरसात, धनक, और शबनम वग़ैराह का ज़िक्र है इस के अलावाह एक ऐसी हस्ती की अहेमियत ज़रुरत और अफ़ादियत बतलाने की कोशिश की है. जिस को अक्सर तबक़ा मामूली समझता है और ज्यादा अहेमित नही देता वह हैं जनाब मौलवी सहाब (उलमा, मकतब के मोअल्लमीन, इमाम व ख़तीब, मोजिनीन, हज़रात वगैराह) और एक मोहरतम हस्ती जिसको उफ़ कहेने का हुकुम नही है वह माँ है जिस की मम्ता का कोई नियमुल बदल नही है. माँ की अज़मत को तफ़सीली तौर पर बयान करने की कोशिश की है.

मजमूआ कलाम हाज़ा मे महासिन के साथ मआयब और कमज़ोरियाँ भी होंगी आप की रहेनुमाई और दुःआओं की ज़रुरत है. इस किताब की तदवीन वह तकमील में हमारे करम फ़रमा मोहमद मुश्ताक भाई दुरवेश का काफ़ी अमल दख़ल है और मौलवी एजाज़ सहाब D.T. मदीनातुल उलूम हाई स्कूल और मोहम्मद इद्रीस हुसेन अन्सारी सहाब का तावुने अमल क़ाबिले ज़िक्र है. आखेर मे मरहूम अ. क़ादर सहाब बेदिल की इसलाह व रहेनुमाई के बगैर येह मजमूआ ना मुकम्मील रहे जाता अल्लाह ताआला उन्हें जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए और मग़फ़िरत फ़रमाए.

मोसूफ़ के आलावाह भी उलमाए इक्राम ने इस हीचमदों के शेअरी मजमुए बयाज़े शाकेर पर इज़हारे ख़ियाल फ़रमाकर इस की अफ़ादियत तसलीम किया है. और क़ौम व मिल्लत के लिए सूदमंद बतलाया है और ज़ीनत बख़्शी मौलवी ज़ुबेर अहेमद सहाब ने कलाम का मुताला कर के तफ़सीली तौर पर आपने तास्सुरात पेश किए.

ख़ास व आम ने बे हद पसंद किया और महजूज हूए लेकीन यह शेअरी मजमूआ नक़्श अव्वल और पहेला कदम है बहूत करना और सीखना है फिर भी इस्लाह की कोशिश की गई इस सिलसिले मे कुहना मश्क शाओर मोहतरम अ. कादर सहाब बेदल मरहूम शाएर मोहतरम लतीफ़ोद्दीन सहाब दातार ने नज़रे सानी की इसी तराह मोहतरम हाफ़ेज़ हसन सहाब और आली जनाब सय्यद साबेर बसमती की रहेनुमाई बायसे तशक्कुर है. बयाज़ शाकेर की तबाअत के लिए जिन जिन हज़रात ने तआऊन दिया और दिलवाया जिन में मोहतरम मुफ़ती सय्यद तमीज़ोद्दीन सहाब और मोहतरम अ. रशीद सहाब कंधारी पेश पेश रहें और दूसरे अहेबाब ने जिस जिस एतेबार से रहेनुमाई व तआउन किया है अहेक़र इन सभी हज़रात का तहे दिल से ममनून और मशकूर है.

अलदमदु लिल्लाह शेअरी मजमूआ बयाज़े शाकिर का दूसरा एडीशन (हिंदी) जेवरे तबाअत से आरास्ता होकर आपके पेशेनज़र है.

इसके लिए बक्त़ और मेहनत ज़्यादा लगी मज़ामीन के इबारत की बारबार दुरुस्ती और इस्लाह जरुरी थी. ग़ैर उर्दूदाँ हज़रात की सहूलत व आसानी के लिए लुग़त के सफ़हात तरतीब दिए गए यह बडी मर्सरत की बात है केह अहक़र अपने सरमाए अदब को अपनी कौ़मी ज़बान में मुन्तक़िल करने की कोशिश कर रहा है. हिंदी और उर्दू दो बदनें है जो हमेशा कौमी एकजहती व इत्तेहाद की अलम बरदार रही हैं.

पहला एडीशन (उर्दु) अहक़र और कलाम के तआरुफ़ का ज़रिया बना क़ारीईन, अहले इल्म व अदब ने सराहा आम लोग भी मुतास्सिर हूए बगैर न रह सके प्रो. युनुस फ़हमी साहब की शखसियत हलकेअदब शेअर व सख़ुन, इल्मी व तहक़ीक़ी मैदान मे मुहताजे तअरुफ़ नही है. बडी मसर्रत का इज़हार फ़रमाया और तआरीफ़की मौसूफ़ के दिली तआस्सुरात को पेशे कारीईन करता हूँ

फ़हमीसे पूछा मैंने एक सवाल
बयाज़ेशाकिर पर हो इज़हारे ख़्याल

मोतीकी लडियाँ हैं बिखरे हैं लाल
महकता हूआ गुलशन है, क्या बेमिसाल

बुज़ुर्ग और इल्मी शख़सियत काज़ी सर का तबसिरा एक हिंदी स्कॉलर होने के नाते बडी अहमियत रखता है.

बज़्मे मुशायरा के रुहेरवाँ फ़िरोज खाँ रशीद साहब के तबसिरेने चार चाँद लगादिए लगादिए

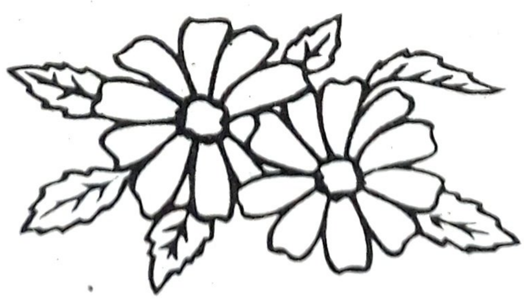
रफ़ीक़े मुकर्रम मौलवी मसऊद अख़तर साहब लिक्चरार उर्दू की हिदायात तो मशअले राह और बायसे तशक्कुर हैं.

शेअरी मज़मूआ हाज़ा (हिंदी एडीशन) की तबाअतके सिलसिले में शहर के मशहूर व मारूफ़ इल्म दोस्त और अदबनवाज़ डॉ. ख़ुर्शीद अहमद साहब ने शुरु से आख़ेरतक दिल चस्पी ली साबेकामुआविनीन भी पीछे नही रहे. आली जनाब कमालोद्दीन सिद्दीकी साहब साजिद और क़ाज़ी सर की रहनुमाई व हौसला अफ़जाई हमेशा याद रहेगी.

मु. इद्रीस साहब मेमन विराणी की दिलचस्पी काबिले सतायश है.

अहक़र अपने सभी मुआविनीन व मुहसिनीन का बेहद ममनून व मशकूर है.

फ़क़्त
शेख़ अहेमद शाकेर (एम.ए.बी.एड.)
सेवानिवृत अध्यापक
मदीनातुल उलुम हॉई स्कूल नांदेड
मोहल्ला बिलाल नगर (पुराना पुल नांदेड)



अभिप्राय

एन.एन. काझी साहब

मेरा अभिप्राय

सन्माननीय उर्दू हिन्दी कवी शे. अहमद सहाब शाकेर कलमनुरी उर्दू प्राध्यपक कनिष्ठ महाविद्यालय मदिनातुल उलूम हाईस्कूल नांदेड की प्रतिभाशाली काव्यवृति का अवलोक तथा पठन करने का अवसर मुझे मिला यह मेरा सदभाग्य मैं समझता हूँ ।

श्रीमान की सभी कविताओं का मैने मनःपूर्वक और श्रद्धा भाव से केवल पठनही नही बलिक रसग्रहण भी किया। जैसा के संस्कृत में कहागया है रसात्मकम वाक्यम काव्यम इनके काव्य रचना में काव्य की विशेषताँए दृगोचर होती हैं। अलंकार, वृत्र, उपमा, भावन्तकटती अनुभूती है पाईजाती हैं । हिन्दी तथा उर्दू काव्यात्मकता की अनुभूति कवीर्य शाकेर सहाब के रचना में मैने पाया। विशेषतः गज़ल, हमदे बारी वगैरा कविता सचमुच मन को लुभाकर अंतःश्र्वक्ष प्रसन्न करती हैं ।

हुब्बे वतन कविता का पठन करते समय कविता का पढ़ने वाला मातृभूमि और प्रभावित होजाता है ।

आरज़ू कविता में उद्‌घृत कवी के विचारें पढते समय मानवी जीवन मे सिवाय भगवान के चरणों मे लींन होने के अन्य भाव मन को स्पर्श नही करता ।

कवीवर्य शाकेर साहबने काव्यं रचना में समकादि रचना को संभालते हूए गेयता, कल्पकता, आदि गुर्णो की और विशेषकर ध्यान दिया.

संक्षिप्र में यह के वे एक प्रतिभा शाली कवि हैं । इनका काव्य संग्रह पढ़कर मेरा मन बहुतही प्रसन्न हुआ। भगवान से प्रार्थना है की उन की काव्य चेष्टाओं का विजयश्री दे ।

ए.एन. काझी
सेवानिवृत्त अध्यापक
एम ए. (मराठी) बी.एड. तथा
हिन्दी पारंगत (आगरा) उमर कॉलनी
शहज़ाद मंज़िल, नांदेड.

अभिप्राय

फ़िरोज रशीद साहब

"हिंदी की महफ़िलों में शाकिर है देखो आया
उर्दू में गीत गाया हिंदी ने मुसकुराया"

"बयाज़े शाकिर" का हिंदी अनुवाद आप के हाथों में है । यह उर्दू के शायर शेख अहमद शाकिर की गज़लों, गीतों और कितात (चार पंकतियाँ) का मजमूआ है । शेख़ अहमद शाकिर एक सीधे सादे आदमी हैं और बडे नेक हैं. उनकी शायरी जैसी भी है वह आपके सामने है. उन्हों ने अपनी शायरी द्वारा सामान्य आदमी के जज़बात और एहसासात को पेश किया है । वह कहते हैं ।

शबेग़म बहोत बेक़रार गुज़री है
बर्क़ लहराती हूई बार बार गुज़री है ।।

यादे माज़ी की हसीं घडियाँ
चश्म दरया उबलता जाता है

जिंदगी की सच्चाई बयान करते हूए शाकिर साहब ने कहा

लमह-ए-निशात का खुलजाएगा भरम
ऐ गुंचेतू ज़रा खिलखिला के देख ।।

आज एक ग़रीब आदमी इन्साफ़ पाने के लिए दर दर की ठोकरें खाता फिरता है और इन्साफ़ मिलने की आस में कभी कभी दम तोड देता है. शाकिर साहब ने इस और अपना क़लम उठाया और लिखा

ऐ अद्ल व इन्साफ तू बता कहाँ है तेरा पता
बसती बसती सहेरा तुझको पुकार आया

और भी बहोत सारे शेर ऐसे है जिन में शाकिर साहब ने सामाजिक बुराइयों की और इशारा किया है बयाज़े शाकिर को मार्च २००७ में उर्दू भाषा में प्रकाशित किया गया और उसका हिंदी अनुवाद प्रकाशित होने जारहा है । में इस अवसर पर जनाब शेख़ अहमद शाकिर साहब को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ की वे भविष में भी लिखने का काम जारी रखेंगे

बहोत सारी शुभकामनाओं के साथ

फ़िरोज़ रशीद
कवि एंवमंच संचालक

शेअरी मजमूआ बयाज़े शाकिर
उर्दू व हिंदी एडीशन
के लिए अरकाने एज़ाजी की फ़ेहरिस्त

उर्दू एडीशन

१. मो. मुफ़्ती स. तमीजुद्दीन साहब क़ासमी, पीर बुरहान (रह.), नांदेड.
२. आली जनाब अ. रऊफ़ साहब मोमिन, कंट्राक्टर सांगवी, नांदेड.
३. आली जनाब उस्मान सेठ, केला मार्केट, नांदेड.
४. आली जनाब मु. फ़ारुक़ साहब मेमन, मोंढा, नांदेड.
५. आली जनाब अ. जलील साहब सौदागर, राजेश चुना, देगलूर जि. नांदेड
६. आली जनाब अ. हादी साहब (इंजिनियर) सय्यदान, नांदेड.

हिंदी एडीशन

१. मो. मौलाना अ. रशीद सहाब कंधारी सौदागर, मोंढा, नांदेड.
२. आली जनाब म. इद्रीस साहब मेमन विराणी वल्द हाजी मु. इस्माईल साहब विराणी, कय्युम प्लॉट, नांदेड
३. आली जनाब अ. रऊफ़ साहब मोमिन (कंट्राक्टर) सांगवी, नांदेड.
४. आली जनाब डॉ. खुर्शीद अहमद साहब, (M.D.) नांदेड.
५. आली जनाब मु. फ़ारुक साहब मेमन, मोंढा, नांदेड.
६. आली जनाब मु. अज़हर साहब, प्लॉटींग डीलर, पीर बुरहान (रह), नांदेड.
७. आली जनाब मु. जमील साहब मेमन (इंजिनियर) चैतन्य नगर, नांदेड.

तख़रीज़

अलहमद लिल्लाहि वहदुहू वस्सलातु वस्सलामु अला मल्ला नबिया बादुहू अम्माबाद- अल्लाह ताआला ने इन्सान को पैदा करके उस को बयान की कुव्वत अता फ़रमाई ख़लक़ुल इन्साना व अल्लमहुल बयान केह अल्लाह ताआला ने इन्सान की तख़लीक़ की और उस को बयान सिखला दिया इसी बयान की दो क़िस्म हैं एक नसर दुसरे नज़म नसर निगार को अदीब कहेतें हैं और नज़म व अशआर कहेने वाले को शायर कुरआने मजीद में मुसतक़िल एक सुरते मुबारका का नाम ही सुरते शुअरा है. जिस में ईमान वाले आमाले सालेहा जिकर अल्लाह से मुतस्फ़ि शुअरा को गुमराही से मुस्तस्ना क़रार दिया है. औ अल्लाह के रसूल (स.) ने भी शेअर की तारीफ़ करते हुवे फ़रमाया है. (इन्ना मिनश शेइरि लहिकमतुन व इन्ना मिनल लिसानी लसिहरा) तो मालूम हुवा के शेअर गोई कोई बुरी बात नही बल्के हर सलीमुत तबा इन्सान में ये सिफ़त होती है और क़दीम व जदीद दौर मे ऐसी शख़्सियात गुज़री हैं. और आज भी मौजूद हैं. इन्हीं मे हमारे आली जनाब मौलवी शेख़ अहेमद सहाब शाकेर (एम.ए.बी.एड.) जो मदीनातुल उलूम जुनियर कॉलेज मे ख़िदमते तद्रीस से वाबस्ता रहे और हुसने ख़िदमत पर सुबुक दोष होने के बाद आपने मजमूए कलाम को जमा फ़रमाया और मुख़तलिफ़ कलाम पर तबा आज़माई फ़रमाई और असातेज़ाह से इसलाह के साथ दादें हासिल फ़रमाई. सब से बडी ख़ूबी इन के कलाम की सादगी है और वक़ौले ग़ालेब.

कहेतें है ग़ालेब का अंदाजे बया और चाहे तो येह शाकेर का मिस्दाक़ है मैं ने चंद जगोंह से इनके कलाम का मुताला किया और बेसाख़्ता येह बात ज़हेन मे आई केह

ये मसाएले तसवउफ़ येह तेरा बयान शाकेर

ग़ालेब की रुह से माज़ेरत के साथ बहर हाल मौलवी शाकेर सहाब अपने मजमूए कलाम को शाए करने जारहे हैं और बयाज़े शाकेर नाम तज़वीज़ फ़रमाया है. दुःआ है केअल्लाह ताआला मोसूफ के कलाम के मजमूए को मक़बुलीयत अता फ़रमाए. और अव्वाम और ख़वास इस से मुसतफ़ीद हों. (आमीन)

दुआगो : (मौलाना) मो. मोईनोद्दीन सहाब क़ासिमी

तक़ारीज़

बयाज़े शाकेर नामी शेअरी मजमूआ जो जनाब शेख अहेमद सहाब शाकेर कलमनुरीने मुरत्तिब फ़रमाया देखने का इत्तेफ़ाक हुवा माशा अल्लाह मुरत्तिब अदबी ज़ौक रख़तें है. जो इस दौरे पुर फ़ितन में नायाब है इस शेअरी मजमूए मे मौसूफ ने अपने इफ़कार को उम्मत के सामने बडे ही सादे अंदाज मे दावती फ़िकर के एतबार से बहोत उमदाह पेश किए खुसूसन वालैदैन पर मुब्नी नज़म और हूब्बुल वतनी और जनाब मौलवी सहाब व सहेर ख़ैज़ी जैसे उनवान इन्शाह अल्लाह उम्मत के लिए फ़ायदा वख़्श साबित होगे.

वस्सलाम

मुफ़्ती स. तमीज़ुद्दीन सहाब

मोहल्लाह पीर बुरहान (रह.) नांदेड.

फ़ने शाएरी ज़माना क़दीम से ही बामे उरूज पर रही है इसी वजाह से इन्सान शुअरा से बहोत जल्द मुतस्सिर हो जातें हैं शाएरी में तख़्युल्लाती पहेलू के ज़रीए अपने माफीउज़्ज़मीर को अदा किया जाता है. येह तख़्युलात कभी हजो की शकल मे होते हैं कभी मदह की शकल मे शाअेर अपने तख़्युलाती की अक्कासी मुखतलिफ़ ज़ावियों से करता है हर शाअेर का शाएराना तख़य्युल इस की अपनी विज्दानी कैफ़ीयत पर मुनहसर होता है हर दौर मे शाएरी के अलग अलग अंदाज और रंग ढंग नज़र आतें हैं किसी दौर में शाएरी जंगजुयाना तख़य्युलात का मुरस्सा रही है. तो कभी सोफ़ियाना का मुरस्सा रही है तो कभी फ़लसफ़ियाना ख़्यालात का मुरस्सा रही है और कभी इश्क़ व मुहब्बत की दास्ताँ का मुरक्कब इमजेज़ाज रही है तो कभी आबेदाना तख़य्युलात का मुरस्सा रही है तो कभी सियासी रहबानी तखय्युलात का मुरस्सा रही है तख़य्युलात का मुरस्सा रही है. तो कभी सियासी, रहबानी तख़य्युलात का मुररसा रही है. गर्ज़ हर दौर मे शाअेरी को एक नया जन्म मिला है. आज जब के हर तरफ़ फ़ितना व फसाद फैला हुवा है.

हर तरफ फिल्मी अंदाज की शाअेरी चल रही है. ऐसे माहोल में काफ़ी अर्से से कुछ जिंदा दिल शुअरा की ज़रूरत महेसूस की जारही थी जो अपने आशआर के ज़रिए परागंदाह माहोल को नेक माहोल में तबदील करें और अपनी शाअेरी के ज़रीये दीन और दावती फ़िकर को उजागर करें.

।। उठ ऐ उम्मत के वाली कुफ़्र धमकता है तुझे ।।

मेरा विजदान ये कहे रहा है मजमूए कलाम शाकेर शेख़ अहेमद शाकेर आने वाले दिनों मे इस्लाम के इन्क़लाब का ज़रीया बन जाए और रहेती दुन्याँ तक आपनी पूरी आन व बान के साथ जारी रहे और अपनी तरक्क़ी की मंजिल पर गामज़न रहें.

शराह दस्तखत
अजमौलाना मो. अय्युब कासमी सदर
जमीअतुल उलमा नांदेड.

तक़रीज़

अलहमदु लिल्लाहि कफ़ा व सलामुन अला इबादिहिल लज़ीनस तफ़ा अम्मबाद इन्नामिनश शेअरिललहिकमतुन, शेअर में हिकतम मुज़मिर है

हमारे करम फ़र्मा जनाब शेख अहेमद शाकेर (एम.ए.बी.एड.) के जिगर पारों का मजमूआ बयाजे शाकेर मेरे सामने है अकाबेरे उलमा की तक़ारीज़ के साथ इस नाकाराह की तक़रीज़ रेशम पर टाट का पेवंद के मिसदाक है.

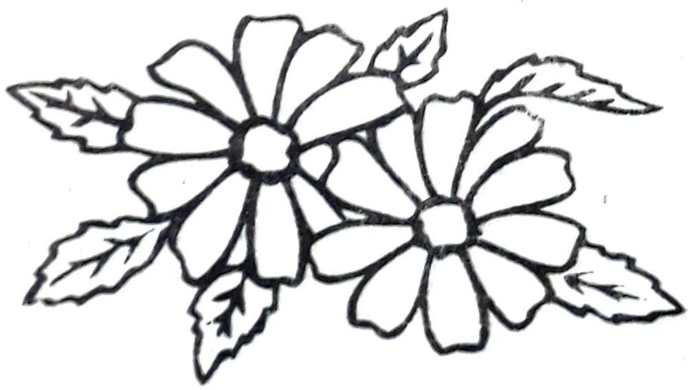
अलबत्ता बयाज़े शाकेर का जस्ता जस्ता मुताएला से बेहद महज़ूज़ हुवा हूँ हक़ ताआला शहानुहु बेहद क़ुबूल फ़रमाए बिलखुसूस दाएयाना अंदाज अशआरं मे नुमायाँ है. अल्लाह पाक उम्मत को इसतेफ़ादा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए.

फ़क्त वस्सलाम

(मौलाना) मसउदु र्रहमान फ़ारुकी पालन पूरी मुक़ीम हिंगोली

जामा किफ़ायतुल उलुमुल लिलबनात

ख़ादिम (ख़लीफ़ा) हज़रत किफ़ायत उल्ला (रह.) पालन पूरी



तक़ारीज़

नहमदुहू व नुसली अल्ला रसूलिहिल करीम
हर दौर मे सालेह और सलीम फ़िकर रखने वाले रहे हैं और उन्होने माशेराह की इसलाह की मुख़्तलिफ़ तुर्क़ से मुमकिन मक़दूर भर कोशिश की है. ऐसे हज़रात मे अदबी ज़ोख रखने वाले भी पेश पेश रहे. जैसे बडे लोंगो में शेख़ सादी हाफ़ेज शिराज़ी (रह.) अल्लामा एकबाल वगैराह ने ऊंचे मेयार पर और इन से कम दर्जे के लोंगो ने अपनी बिसात पर बहोत कुछ इसलाही पैग़ाम मंज़ूम किया है. और ये किसी पर मख़फ़ी नही के मनज़ूम कलाम की तासीर अकसर नसर से क़वी होती है. आली जनाब शेख़ अहेमद वल्द शेख इमाम सहाब का शेअरी मजमुआ ब्याज़े शाकेर भी ऐसी ही कोशिश है मेरी दुःआ है के अल्लाह ताआला इनकी इस काविश को क़ूबूल फ़रमाए और माशराह के लिए इसलाह और इन के लिए नजात का ज़रिआ बनाए (आमीन)

शराह दसतख़त
(मौलाना) अब्दुल वाहेद क़ासमी (सहाब दामत बरकातुहूम
इमाम व ख़तीब मस्जिदे क़ुरैशिया चौक, नांदेड.

अलहम्दु लिअहिलही वस्सलातु लिअहलिहा, अम्माबाद

इसलाम एक दावती मज़हब है और दावत के मुख़तलिफ़ तरीकें हैं. कभी दावत बजरीये नज़म् और कभी बज़रीआ नसर अलबत्ता हर दो अंदाज़ मे मुतरजमीने इस्लाम ने अपनी जौलानी तबा दिखलाई है और बेमिसाल कविशों के ज़रीए मज़हबे इसलाम की हर मुमकिन तरजुमानी की है.

हज़रतअब्दुल्लाह बि रवाह (रजि.) और हज़रत हसान बिन साबीत (रज़ि.) ये तवाफुके शाओरी के नय्यरे ताबाँ थे. लेकीन इन के बाद भी उम्मते मुसलीमां में बेशुमार अज़ीम तरीन हस्तियाँ गुज़री है जिन्होंने अपनी खुदादाद सलाहियतों के ज़रिए इसलाम के आफ़ाकी पैग़ाम को शाए करने की भरपूर कोशिश की है. जिन मे शेख सादी शिराज़ी (रह.) अल्लामा एकबाल, अकबर इलाहआबादी और हाली मरहूम वग़ैराह के नाम बहोत ही मशहूर है.

अलहमदुलिल्लाह आज भी ये अज़ीम तरीन तैहरीक बराबर जारी वह सारी है और इन्शाह अल्लाह तआला ता क़ियामत चलती रहेगी.

ज़ेरे नज़र शेअरी मजमूआ बयाज़े शाकेर भी इसी सिलसिलतुज्जाहब की एक कडी है. जो के मौलवी शेख़ अहेमद सहाब कलमनुरी (एम.ए.बी.एड.) की खुदादाद फ़िकरी कविशों का नतीजा है. जिस में मौसूफ मोहतरम ने निहाय्यत सहेल, आम फ़हम और दावती अंदाज में माशरे के हर फ़र्द को एख ख़ास पैग़ाम पहोंचाने की कोशिश की है.

खुदावंद ख़ुद्दूस इस मजमूए के ज़रीए उम्मते मुसलिमा को ख़ूब ख़ूब फ़ायदा हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए (आमीन)

नियाज़ मंद
(मोहतरम मुफ़ती मो. युसूफ़ कासमी सहाब)
उसताज़े हदीस दारुलउलूम मोहम्मदिया हिमायतनगर, नांदेड

इज़हारे ख़ियाल

मौलवी शेख़ अहेमद सहाब शाकेर मौज़िफ मुदर्रीस से ना चीज़ का तारुफ़ बहोत दिनों से है. जहाँ तक मुझे याद है १९७९ ई. की बात है बिरादरम प्रो. मो. सईदोदीन सहाब की ख़ाना आबादी के ज़िमन ते तहेनिती शाऔरी नशिस्त राकेमुल हुरूफ़ के मकान वाक्ये मोहल्ला नाव घाट मे रखी गई थी. मोसूफ़ ने कलाम सुनाकर महेफ़िल को गर्मा दिया था.

आप का तालुक़ उर्दू के हवाले से पेशए तद्रीस से रहा और आप की कारकरदगी नांदेड क़दीम इदाराह मदीना तुल उलुम हॉई स्कुल और जुनिअर कॉलेज में रही आपको शेअरी ज़ौक़ बचपन ही से रहा जैसा के पेशे लफ़्जसे ज़ाहेर है. तबियत मे सादगी और दीनी मिज़ाज पाया है बहुत से अशआर इस खुसुसियत के तर्जुमान हैं.

कुछ दिनो पहेले ग़रीब ख़ाने पर तशरीफ़ लाए औ इशाअते ब्याज़े शाकेर का इरादाह ज़ाहेर फ़रमाया कलाम भी बासराह नवाज़ हुवा. मौलवी सहाब के एहतराम को मलहूज़ रखते हुवे मै ने चंद मशविरे दिए मौलवी सहाब अपनी मसरुफ़ियात की वजाह से और उनके चंद अहेबाब को ब्याज़ की इशाअत की उज्लत होने से शायद उन पर तौवज्जानादे सके.

मौलवी सहाब के एक बुर्ज़ुग करम फ़रमा मोहतरम लतीफ़ोद्दीन दातार सहाब जिन की नातो का मजमूआ नग़माते ईमानी शाय हो चुका है की अलालत से भी अदम सहूलत रही. नख़ादाने अदब से गुज़ारिश है केह मौलवी सहाब के ख़्यालात और एहसास को दादे तेहसीन से नवाज़ा जाए परवरदिगारे पाक से. दुःआ है केह बतसद्दुक सरवरे दो आलम (स.अ.स.) सहाबे बयाज़ आएंदा शेअर गोई मे तरक़्क़ी की मंजिले तऐं करें (आमीन)

ख़ैर अंदेश
मो. कमालोद्दीन सिद्दिक़ी साजिद
विसावानगर, नांदेड, १५/ मार्च २००७

एक नजर बयाज़े शाकेर पर

मै ना उर्दूदॉ हूँ नाही सही मानों मे शेअर फ़हेम लेकिन ये अर्ज़ करदेना जरुरी है. के मुझे बचपन ही से उर्दू ज़बान व अदब से शग़फ़ रहा है. उर्दू शाअेरी और मिज़ाह निगारी मेरी पसन्दीदा अस्नॉफे सख़ून मे से हैं शहेर कलमनुरी इल्म व अदब के लेहाज़ से मर्दुम खेज़ वाकेए होवा है ज़हाँ की सर ज़मिन से मौलवी शेख अहेमद सहाब की वाबसतगी है. क्यों ना हो ये शहेर इन का असल वतन है अब उन्होनों ने नांदेड शहेर को वतने सानी बना लिया है जो इल्म व अदब का गेव्हारा हैं. मैं मोहतरम शेख अहेमद सहाब से बहुस्न व ख़ूबी वाकिफ़ हूँ मुलज़िमत और ख़िदमत से सुबकदोश होने पर इन की ज़ाते आली पर मुख़तेसर ख़ाका लिखा था जिस पर कारीईन व सामाईन ने दादे तैहसीन पेश क्या और मेरी पज़िराई की थी जिस माहोल मे साहेबे मोसूफ़ पले बढे जिस दिनी, दावती और मोमीनाना फ़िज़ामें उनकी फ़िक्र वजहेनकी उठान हूई उसमें उनके वालेदैन और दिगर बुजुर्ग हज़रात काफी मावेन व मददगार साबित हूये जिनकी बदोलत मौसूफ दर्स व तदरीस जैसे मुकद्दस पेशे से बहैसियत मुदर्रिस और जुनिअर कॉलेज लेक्चरर कामयाब रहें.

मुशकिले कुछ भी नही अज़मे जवाँ के आगे
हौसले आहनी दीवार गिरा देतें हैं.

के मिसदाख मौलवी शेख़ अहेमद सहाब तहेरीरी और तक़रीरी सरगर्मीयों मे हमेशां पेश पेश रहे पेशाए तद्रीस से रिटाएरमेन्ट के बाद भी वह हमेशा की तराह खुश मिज़ाज मतीन आला ज़र्फ़ और शेअर शायरी का ख़जाना लिए हूए नज़रआतें हैं उन्होने अपनी इन्फ्रादियत को कायम रखा. शेअरव शायरी मानो उनके रग पे मे रचीबसी है.

शाकेर सहाब की शायरी मे खुद बीनी खुदा बीनी और जहाँ बीनी की

झलक मिलती है मिसाल के तौर पर
सहेर ख़ैज़ी ख़ुदा की नियमत है
देर तक सोना बुरी आदत है
मख़लूक का हर रूक्न ताबे है मशियत के
फिर इंसान क्याँ यारो अहेद शिकन है

सुबहदम उठ सजदै शुक्र व हम्द कर शाकेर
देख मशग़ूले इबादत वह मूर्ग़ाने चमन हैं

अज़ायम की मेराज के हैं ये तो भर पूर जल्वेह
ज़मीन पर हम हैं मगर सितारों पर गुज़र होती है

शायर हक़िक़ी मानों मे वह है जिस की वारदाते क़लबी से इंसानों को खुलूस व मोहब्बत, ईसार व कुरबानी का जज़बा मिलें जिसके कलाम में माएने के ख़जाने और मतालिब के दफ़्तर पिनहाँ हों जो इलम व अदब का पयाम्बर हो जिस के अशआर सहेर अंगेज हों जो मुहिब हो महेबूब से आबेद को माबूद से और तालिब को मतलूब से मिलादे जिस का मलकोती तख़य्युल नौ जवानो मे तहेरीक और इन्कलाब पैदा करदे ये खूबियाँ शाकेर सहाबके मजमूए कलाम ब्याजे शाकेर में बदर्जा अतम मौजूद हैं.

मो. ज़ुबैर अहेमद सहाब

बि.एस.सी.,एम.ए., बी.एड.
मुदर्रीस मदीनातुलउलुम हॉयर सेकंडरी स्कूल नांदेड.

Q1 दुआ

अहले गीती के लिए हिदायत मांगूँ
तेरे बंदो के लिए जन्नत मांगूँ

तेरी मर्ज़ी तेरी चाहत मांगूँ
जिंदगी में मेरे सरकार (स.ह.स.) की सुन्नत मांगूँ

हुसूल रिज़्के हलाल ही शेवा हो मेरा
दौलते क़ारुन की हरगिज़ न चाहत मांगूँ

अद्ल फ़ारुकी हो पेशेनज़र मन्ज़ूरे नज़र
नक्शे फिरऔन की हरगिज़ न हुकूमत मांगूँ

हवाए तुन्द से मुर्झाई जाती हैं कलयाँ
दुख़तराने हव्वाके लिए राहत मांगूँ

पानी की तऱ्हा आर्ज़ां हुआजाता है इन्साँ का लहू
अक़्साए आलम के लिए अमन की दौलत मांगूँ

तेरी इताअत में रहूँ सदा सर ब सुजूद
तुझ को मक़बूल हो या रब वह इताअत मांगूँ

नौनिहालाने चमन को वहतौफ़ीक़ अताकर मौला
ख़िदमते ख़ल्क़ व माँ बापकी ताअत मांगूँ

शीर व शकर बनके रहें हम शाकिर
अहले वतन जहाँ के लिए राहत मांगूँ

1 हम्दे बारी

कुदरत के क्या क्या जल्वेह रौनक़े चमन हैं
और क्या क्या अज़ाएबात उस परे ग़गन हैं

सहेरा में शादाब नख़्ल व चमन हैं
गुलिस्ताँ में प्यारे गुल वह सुमन हैं

परिंदों की परवाज़ को नीले गगन हैं
बहेरे जख़्ख़ार मे मछल्याँ मस्त मगन हैं

शुतर मुर्ग़ को दी उसने सहेरा की दौलत
गुल व बुलबुल के लिए कैसे शादाब चमन हैं

तख़य्युले इंसाँ को दी क्या क़ुव्वते परवाज़
वह उक़दय फितरत की कुशाई से मगन हैं

मख़्लूक़ का हर रुक्न ताबे है मशीयत के
फिर इंसान क्यों यारो अहेद शिकन हैं

हरकत में जिंदगी और कोशिश में भला है
अहेले गफ़लत व जम्मूद तो बे रूह बदन हैं

सुबहदम है उठ सजदै शुक्र, हम्द कर शाकेर
देख मशग़ूले इबादत वह मुर्ग़ाने चमन हैं

2 हम्दे बारी

तूने भेजे नबी रहेमत लेके तेरे बूर्हान
तूने पैदा क्या हम को दिया जीने का सामान

तुझ पे फ़िदा मैं और मेरी सौजाँ कुरबान

तूने बनाया हमें अशरफ़ और इंसान
तूने दी इल्म की दौलत और बताई पहेचान

तूझ पे फ़िदा मैं और मेरी सौजाँ कुरबान

तौफ़ीके हिदायत देके दीन दिया आसान
ये तेरा बडा एहसान तू है बहोत मेहेरबान

तुझ पे फिदा मैं और मेरी सौ जाँ कुरबान

तू है मालिके दो जहाँ सब का है सुलतान
तू है मालिके अर्ज़ व समाँ और लामकान

तुझ पे फ़ि दा मैं और मेरी सौ जाँ क़ुरबान

तूने भेजे नबी दो आलम देकर कुरआन
आप (स.) ने सुनाया सब को तेरा पैग़ाम

तुझ पे फ़िदा में और मेरी सौ जाँ क़ुरबान

तूही मौत वह ज़ीस्त का मालिक ऐ रहेमान
हाथ में तेरे दो जहाँ की है अनान

तुझ पे फ़िदा मैं और मेरी सौ जाँ क़ुरबान

तूही साहिल तूही कश्ती तूही बादबान
चाहे हवा तेज़ चले आए गर तूफ़ान

तुझ पे फ़िदा मैं और मेरी सौ जाँ क़ुरबान

बाग़ो जहाँ का तू रखवाला और निग्रान
सब का तू रोजी रसाँ मुशफ़िख व मेहेबान

तुझ पे फ़िदा मैं और मेरी सौ जाँ क़ुरबान
तेरे चाँद सितारे और असमान
तुझ पे फ़िदा मैं और मेरी सौ जाँ क़ुरबान

आब व आतिश ख़ाक और बाद का तू मालिक
ये तेरे मज़ाहर तेरी अज़मत के निशान
तुझ पे फ़िदा मैं और मेरी सौ जाँन क़ुरबान

सब मौसम तेरे तूही हवाएं चलाता है
कभी सर्दी, कभी गर्मी, कभी बादों बारान
तुझ पे फिदा मैं और मेरी सौ जाँन क़ुरबान

नूरी, नारी, ख़ाकी, सब मख़लूक तेरी
फ़रिश्ते, जिन और तूने बनाएं इंसान
तुझ पे फ़िदा मैं और मेरी सौ जाँ क़ुरबान

खेतों मे फल फुलारी लहेलहाती फ़सलें
बहेते है लबरेज़ दर्या फ़रहाँ व शादाँ
तुझ पे फ़िदा मैं और मेरी सौ जाँ क़ुरबान

फूलों मे ख़ुशबू व रंगत मे है हूस्न तेरा
फलों मे शिरीनी और ये बाग़ो बाहाराँ
तुझ पे फ़िदा मैं और मेरी सौ जाँ क़ुरबान

शाकेर और ये ख़लक़त सारी तेरी महेकूम व ममनून
सब तेरे आजिज़ बन्दे सब तेरे सना ख़्वाँ
तुझ पे फ़िदा मैं और मेरी सौ जाँ क़ुरबान

3 हम्दे बारी

जमीं तेरा जमीं तेरी आसमाँ तेरा
तुही मालिके कायनात, या रब्बल अलामीन

तूही मालिके मौत व जीस्त तू बडा करीम
नफ़्स व रुह पर तेरा तसर्रुफ या रब्बल अलामीन

तूने पैदाकिया आदम वह हव्वा और मख़लूक को
जुर्रियत तेरी मख़लूक तेरी या रब्बल अलामीन

तू ख़ैरुर्राज़िक़ीन और सब का पालन हार
नज़्मे जहाँ का तू ख़ालेक़ या रब्बल अलामीन

तेरी रुबूबियत क्या कहिए तेरे एहसाँ बेशुमार
ये हुस्ने इंतेज़ाम व एहेतेमाम तेरा या रब्बल अलामीन

इस जहाँने रंग व बू में सब की हिदायत के लिए
भेजे हैं तूने पैगम्बराँ या रब्बल अलामीन

तूने अता की नियमते कुरआन और बनाया इंसान
दिया इल्म अता की शमाए मुबीं या रब्बल अलामीन

तू है आलमुल ग़ैब तुझे हर चीज़ की ख़बर है
तू बडा तेरा इल्म बहेरे बेकराँ या रब्बल अलामीन

तेरी रज़ा व बन्दगी में है मेरी मेराज
इन्कार पर बना शैताने लईं या रब्बल अलामीन

तू है मालिके दो जहाँ और रोज़े जज़ा याकरीम
हिसाब सब का हो आसाँ या रब्बल अलामीन

सब को बख़्श दे इस मे शाकेर भी हो या रब्बे ग़फ़ूर
तेरा ही आसरा हो रोज़े महेशर या रब्बल अलामीन

4 नात

मेरे प्यारे नबी से बढ कर किस का मुकाम है
ख़ुदा के बाद तो आप का शाह वाला मुक़ाम है

आप (स.) सारी उम्मत के मोहसीन गरीबों पे साया
बख़्शादी आपने उसको जिसने जो चाहा

सारी उम्मत के लिए आपका (स.) आँसू बहाना याद है
रात रात भर तडपना आँह भरना तिलमिलाना याद है

दोस्त तो दोस्त दुश्मनो पर भी आप (स.) ने करम फ़रमाई की
माल व ज़र से मूँह मोड कर दौलते क़िनाअत पाई थी

मेहेनत व मशक़्क़त कोशिश व जुस्तजू आप (स.) को महेबूब थी
तसाहुल काम चोरी और गदाई आप को मातूब थी

हज़रते जिब्राईल भी आप (स.) की ख़िदमत मे तशरीफ़ लाते थे
वही इलाही लेकर बार बार ख़िदमत मे तशरीफ़ लातें थे

इल्म व हिकमत की बातों से मामूर थी जाते अक़दस स.
नबी उम्मी लक़ब था लेकिन उलूम मे कामिल थी ज़ाते अक़दस

आपसा (स.) से बढ कर इल्म वह हिकमत मे कोइ सानी नहीं था
आपसा (स.) जामेउल किलम क़ादिरुल कलाम कोई सानी नहीं था

आपसा (स.) सा मुशफ़िक़ वह मेहेरबां खैरुल मुबीं कोई नहीं.
आपसा (स.) ख़ैरुल बशर करम फ़रमा व रहेमतुलिल आलमीं कोई नहीं

शाकेर भी भेजता है बसद अदब व एहतराम
आपसा (स.अ.स.) की ख़िदमत मे लाखों दुरुद व सलाम

5 आज़मीने हज का
विदाई मंज़र

ऐ आज़मीन हज एक दर्खास्ते इलतेजाना
मेरा सलाम लेकर सरकार को पहोंचाना

रश्के जिनाँ है मंजर येह आज की फ़िज़ा ऐं
येह कारवाँ हुवा है सूए हरम रवाना

अन्वार की है बारिश हर सू बरस रही है
उश्शाक की जबाँ पर है हम्द का तराना

मामूर तेरा घर है मामूर फ़रिश्ते हैं
इस जन्नते अर्ज़ी पर तवाफ़े वालेहाना

परवाज़ की वद कुव्वत हम को भी तू अताकर
तू बादे सबा कहेदे आता हूँ मैं दीवाना

दर्दे फ़िराक़ से बस एक बेकली है दिल को
आँखे हूई है पुर्नम हालत है मजनूनाना

तू लातक़नतू ही कहेदे तेरा कलाम सच्चा
तेरी बात है हक़ीकत नही है कोई फ़साना

देखा है बशकले काबा उस नूरे किबरिया को
फ़िरदोसे नज़र मंजर फिर से हमें दिखाना

दिल जान करूँ निछावर बस है यही तमन्ना
करले कुबूल यारब शाकेर का यह नज़राना

6 नात

दावते जिक्र हो मेरा मक़्सदे जिंदगी
डुब्बे सुबाहाँ हो और हूब्बे रसुल (स.)

हमदे सुबहाँ हो के जिक्र रसूल
तजक्रे बाक़ी हैं बेहद फुज़ूल

वाह क्या शान है मेराजुन नबी की
क्या अंजुम वह कहेकशां राह की धूल

खुदा के नबी और प्यारे रसूल (स.)
दुःआ आप के बायस होती क़ुबूल

कितने मोनिस, गम ख़ारकथे और शफ़ीक़
रहेते उम्मत के ग़म में अकसर मलूल

दुरूद व सलाम सब पढतें रहें
हाँ मोहब्बत का है ये जरींवुसूल

सारी उम्मत को बख़्शदे या रब
तुफ़ेल इस पाक हसती मकबूल (स.)

हो जाऐ दुःआ मेरी क़ुबूल
तुझे वासता हूब्बे रसुल (स.)

रोता हूँ अपनी कम माएगी पर
कैसे करूं हम्द (स.) व जिक्रे रसूल (स.)

कसता दुरूद बर मोहम्मद रसूल (स.)
अहेले बदर उहद और ऑले रसूल (स.)

साहबा की अदाएँ सुबहानल्लाह
शान मे उन के आयतों का नुज़ूल

मुक़ामे महेमूद सिर्फ़ आप ही को मिले
या इलाही करना बस दुःआये कुबूल

इस सगे दुन्या को तू अब मुख़लिस बना
हसरत से रहेता है बे हद मलूल

बख़्श दे हम सब को या रब
तुझे वासता है मोहम्मद रसूल (स.)

दर्द उम्मत का अता कर या रब
दिल मे मेरे हो फ़िक्रे रसूल (स.)

हज़रत हव्वा बनी जौजे नबी
यवज़ दुरुद बर मोहम्मद रसुल (स.)

क़िस्मत पे नाजॉ क्यों हो ना शाकेर
मिले हैं हमें कितने प्यारे रसूल स.

-अज़तुफैल आप (स.) के ऐ नबी (स.)
बख़्श दी रब ने आदम की भूल

हर शोबए जिंदगी के आप (स.) रहेनुमा
बताए जिंदगी के जरीं उसूल
आपके हूस्न अख़लाक से यानबी
रश्के तूबा बने हैं बबूल

7 आरज़ू

दरे आस्तानेय यार पर जबीं रखदूँ यही आरज़ू है
इज़हारे उलफ़त व वफ़ा करदू यहीं आरज़ू है

मेरी दीवानगी पर हंसता है ज़माना तो क्या परवाह
इसी दीवानगी को निसारे यार करदूँ यहीं आरज़ू है

वफ़ाए मोहम्मद वफ़ाए खुदा है ये क़ौल वाक़ई बजा है
इसी अज़्म का इक़रार बार बार करदूँ यही आरज़ू है

कलमा तय्यब मेरा दीन व ईमान है खुदा व रुसुल पर एक़ान है
इसी कलमाए हक को गुलूए हार करदूँ यहीं आरज़ू है

एक सजदा भी इनक़लाब व दरख़शानीये मुक़द्दर है
जबीने नियाज़ को आलूदये ग़ुबार करदूँ यही आरज़ू है

क्या ही अलताफ़ व इनायत हम पर हूई जा रही हैं
इन नियामतों पर शुक्र बे शुमार करदूँ यहीं आरज़ू है

ये फ़ितरत हसीं, कायनात हसीं के जल्वेह सुबहान अल्लाह
इन पे बे ख़ुदी निसार करदूँ यहीं आरज़ू है

राहें मंजिल में क्योंहायल हूए जाते है रक़ीब
इन मसायल को सुपुर्दे यार करदूँ यहीं आरज़ू है

फ़ैज़े किरदारे नबी (स.) , नक़्शे क़दम और आपके हूसने अम्ल से
फ़िज़ाए मसमूम को मुश्‍कबार करदूँ यहीं आरज़ू है

जिंदगी बराए बन्दगी है और इस का हासिल यही शाकेर
हर लमहए जिंदगी को मंशाए यार करदूँ यहीं आरज़ू है

8 ग़ज़ल

बर्क़ की चष्मक ज़नी सा है हिजाब उनका
वजूद क्या है एक पारै सीमाब उनका

एक ही निगाह मे जो कर दिया मदहोश
वह क्या नज़र है क्या शबाब है उनका

उनके आते ही बज़्म जो रौशन हूई
वाह चहेरा है गोया माहाताब उनका

वह तबस्सुम रेज़् क्या शीरीं कलामियाँ हैं
दिले नादाँ को बहोत भाया ख़िताब उनका

इतने महेव थे उनकी ख़ुश अदाइयों पर
बहोत देखा किए हुसन लाजवाब उनका

कोई शजरे हसीं का गुमान होता है
दहेन गुन्चा और चहेरा गुलाब उनका

1 गज़ल

इन्सान क्यो ख़ूएवफ़ा भूल गए
नादान फ़रिश्तों की अदा भूल गए

दयारे ग़ैर पर रुस्वा हुए सायल बन कर
उस जव्वाद की लुत्फ़ व अता भुल गए

लज़्ज़ते गुन्हा ने लूटी ऑह! ये उमरे अज़ीज
रहेमान से वह अहदे वफ़ा भूल गए

बज्म की रंगीनियों में डूबे इस क़दर
मन्शा इलाह और वक़्ते क़ज़ा भूल गए

विरसय मग़रिब को रखतें है दिल से अज़ीज़
अपने महेबूब (स.अ.स.) की हुसने अदा भूल गए

दावते ज़िक्र देता रहा रब का मुनादी शाकेर
ख़्वाबे ग़फ़लत में मौज़्ज़न की सदा भूल गए

10 ग़ज़ल

शबो ग़म बहोत बेक़रार गुज़री है
बर्क़ लहेराती हूई बार बार गुज़री है

हमदम हम नशीं ना कोई ग़म गुसार हुवा
सबा रोती हूई बेक़रार गुज़्री है

तूफाँ वतलातुमने दिया मंज़िल का पता
अपनी कश्ती बहेर में बेसहार गुज़री है

राह गुज़र की ठोकरों ने जीने का सलीक़ा बख़्शा
ये जिंदगी बडी ख़ुश गवार गुज़री है

ऑह । फिर से होगई सुर्ख़ अर्ज़े करबला
कुरबानी तेरी हुसेन याद गार गुज़री है

जुसतजूए आदमे ख़ाकी के उरूज की लहेरें
कभी आसमाँ कभी कहेकशाँ से गुज़री हैं

कभी गुलज़ारे चमन कभी खिजाँ बारे चमन
शाकेर ये जिंदगी मुस्तआर गुज़री है

11 ग़ज़ल

अब दोस्ती हो गयीपीरे कामेल से
क़ुर्ब होजाएगा मुझको मंज़िल से

वह उनका जल्वाह जल्वोहे तूर तो नही लेकीन
क्यो होश मे लातें हो अपने आँचल से

फ़ितनों को हवा देकर भी ख़ामोश नही हैं
हर बार वह टकरातें है मेरे शिशए दिल से

बीच दर्या किस कदर तुफ़ॉ तलातुम है
मौजे क्या टकरा रही हैं साहेल से

बागबाँ सो गाए मुहतिसब है मदहोश
काफिले भटकें हूए कितने मंजिल से

राहे मंजिल से गुज़रुं मैं बे खटके व बे बाकाना
दीवाने को क्या काम है यारो, असबाब वह इलल से

बीच तुफाँ में था मंजिल का पत्ता
लोग बस, देखा किए दूर साहेल से

एक ऐसी नज़रे इन्कलाब हो शाकेर
मोम होजाएँ गरहों संग दिल से

12 ग़ज़ल

पुख़्ता है उस का अज़्म मुक्कमल निज़ाम है
तसवीरे कायनात कहाँ ना तमाम है ।।

देखी थी एक निगाह तो तबिय्यत मचल गई
ये बेक़रारी दिल की सुबाह शाम महे

गुल पे तबस्सुम है और हर रुह है फ़रहाँ
आने वाले तेरा, क्या ही एहेतमाम है ।।

इस बज़म की वल्लाह क्या ही शान है
हर ज़र्रे को बख़्शी गर्दिश मुदाम हैं

अब तो तस्ख़ीरे कायनात का गो अज़्म है पुख़्ता
लेकिन अभी मुबतदी हूँ और शऊर खाम है ।

सिर्फ़ एक निगाह पुर साहेर के लिए
मैकश तेरा अभी तिशना काम है ।।

जियो तो औरों की भी जीने दो शाकेर
ये मैख़ाना तो एकसां मुफ़ीद व आम है

13 ग़ज़ल

तहेरीर बदल सकती है तदबीर बदल सकती है
हुसने अमल से यारो तक़दीर बदल सकती है।।

सिला रहेमी की कडियाँ झरने हैं दर्या के
सूखे हूए पेडों की तासीर बदल सकती है ।।

तालेब हों, इज़्ज़त के ख़ुद ही झुकें पहेले
अंदाजे तवाज़े से तहेक़ीर बदल सकती है ।।

गर अज़्म मुसममम हो तो आसान है मंज़िल
बिखरे हूए ख़्वाबों की ताबीर बदल सकती है ।।

हुस्ने अमल और सदक़ा रोके हैं बलावों को
दस्ते दुश्मन मे रखी, शमशीर बदल सकती है ।।

हम शुक्र व सब्रर से मालिक को राज़ीकरलें
उलझे हूए मसलो की ज़ज़ीर बदल सकती है ।।

अगर औसाफ़े ख़लील होंतो कुछ ग़म नही शाकेर
दहेकती हूई आतिश की तासीर बदल सकती है ।।

14 ग़ज़ल

फ़सले व गुल है और घटा छाई है
भरी है बज़्म हर सू रानाई है ।।

हर अदा उनकी, जान लेती है
बताओ तो, ये कैसी मसीहाई है ।।

कल का वादा और फिर मुकर जाना
ख़ूब क्या दोस्ती निभाई है ।।

दिले मुशताक़ का तडपना क्या
देख मंजिल क़रीब आई है ।।

दर्द का हासेल है उन का विसाल
"क्या दीवाने ने मौत पाई है" ।।

हुसन व शबाब ख़ुशअदाई भी
हसीं गुलशन मे बहार आई है।।

उन से मेरा सवाल है शाकेर
दरे ग़ैर पर क्यो गदाई है ।।

21 ग़ज़ल

कई अहेले नज़र और कई अहले हुनर होतो हैं
कोई शाह, और कोई शाहगर होते हैं

तू ज़ाहेरी हुस्न वह नज़ाकत पे ना जा ऐ दोस्त
के हर सदफ़ मे निहाँ एक ही गोहर होते हैं ।

किसी ज़र्रे को हाँ हीच ना जानो हर गिज़
इसी ज़र्रे में पोशीदा, गोहर होते हैं ।।

एक ही नज़र मे आँक लेते कसोटी बन कर
कैसे कैसे यहाँ अहेल नज़र होतो हैं ।।

रिश्ता दर्द को फ़रोग़ देना मसीहा बन कर
जुल्म भी सई पैहम से ज़ेर व ज़बर होते हैं ।।

दर्द से तडपे कोई या सेएकहीं जहाँ में
वह भी अपने अज़ीज़, दिल व जिगर होते है ।।

होजातें हैं दो जहाँ मे सुर्ख़ रु व बामुराद
जो बन्दे रब के मुती मन्ज़ूरे नज़र होते हैं ।।

अज़्म फ़रहाद से मंजिल बहोत आसान है शाकेर
इसी से रौशन, राह गुज़र होते हैं ।।

22 ग़ज़ल

जवानी की हर हसीं शाम व सहर होती है
जिंदगी फूलके सेजों पे बसर होती है

आमदे बहार है गुलशन पे शबाब आया है
घर घडी शुगूफ़ता हर नज़र हुसने नज़र होती है ।।

अन्‌जुम निसार होते है जिस रात पर क़सम
उस रात की भी क्या ख़ूब सहर होती है ।।

इस गंजे राख पर हरगिज़ ना तास्सुफ़ करना
इसी ही ढेर मे जाने शरर होती है ।।

दोस्त हैं मुख़लिस हैं और मुहिब्बाने इनाद
कैसे कैसे रहे गुज़ारों से गुज़र होती है ।।

अज़ायम की मेराज के है ये तो भरपूर जल्वेह
जमी पे हम हैं मगर, सितारों पर गुज़र होती है ।।

बिदून हुक्म के उस के पत्ता ना हिल सके शाकेर
उसी के हुक्म से गर्दिश शम्स व क़मर होती है ।।

17 ग़ज़ल

ज़िक्रे सुब्हान गर्दिश में
हर लहेज़ा अज़ान गर्दिश में ।।

आफ़ाक़ में वह नुजूमगर्दिशमें
कहेकशावों का हुजूम गर्दिश में ।।

ये इन्क़लाब और तग़य्युरे ज़माना
और बहारो ख़िजाँ गर्दिश में ।।

लुत्फ़ व इनामगर्दिश में
रहमते सुब्हान गर्दिश में

झील व आबशा गर्दिश में
यह बहरे जख़्ख़ा गर्दिश में

फ़लक पर माहताब गर्दिश में।।
माही दर आब गर्दिश में

दिल व दिमाग् और आज़ाए बदन
और ये ख़ून का निज़ाम गर्दिश में ।।

जुसतजूए ना तमाम गर्दिश में
वह साईंस का फ़ैज़ान गर्दिश में ।।

सागर वह जाम गर्दिश में
हर ख़ास व आम गर्दिश में ।।

फ़िक्र का तुफ़ान गर्दिश में
शाकेर भी मुदाम गर्दिश मे ।।

18 ग़ज़ल

हम किस तराह रहेंगे महजूर होकर
तेरे ख़्याल और तुझ से दूर होकर ।।

ख़्यालों में जो मेरे बसती है
रहेगी वह भी, अपनी हूर होकर ।।

चश्म दीदार को तरस्ती है
कब नमूदार होगी नूर होकर ।।

जब तेरे ख़्यालं की वह खुशबू
मेरे दिल मे बसी है सुरूर होकर ।।

ये यादों की बारात का तसलसुल
अब मुलाक़ात होगी, मसरुर होकर ।।

तमन्ना दीद की है मिस्ले कलीम
फिर चमकेगा कोई कोह तूर होकर ।।

क़रीब आ भी जाओ कुछ लमहें के लिए
कब तलक तुम रहोगे दूर होकर ।।

अभी छेडी है गज़ल शाकेर ने
पढता जाऊँ तेरे हुज़ुर होकर ।।

19 ग़ज़ल

एक छोटा सा दिल है मगर उछलता जाता है
उन की आमद से रंगे महफ़िल बदलता जाता है ।।

यादे माज़ी की हसी घडियाँ
चष्मे दरिया उबलता जाता है ।।

बस चष्मे करम के थे हाँ हम तो मरहूने मिन्नत
मिज़ाजे यार बहेकता और फिर संभलता जाता है।।

आह ! एक फूलसा दिल होता है हर किसी का
बता फिर क्यों तू इसे मसलता जाता है।।

क्या कुर्ब व बुअद वह तो एक ही फ़ासले थे
ख़्याले यार बस तसव्वुर मे ढलता जाता है।।

वह देखो रुख़ो ज़ेबा पे घटाए छाई है
अब घटावों से माहताबा निकलता जाता है ।।

अमले इन्साँ, जब मोड लेता है शैतानी
तो फिर रंगे आसमाँ भी बदलता जाता है ।।

इस दारे फ़ानी मे मुख्तसर है ये उमरे अज़ीज़
इस की ज़ीनत पे शाकेर क्याँ मचलता जाता है।।

20 ग़ज़ल

हमें रहे रहे के ख़्याले यार बार बार आया
महेकता, मुसकुराता हुवा मोसमे बहार आया ।।

इस बज़्म मे जिंदगी मुसकराती रही लेकिन
पयामे मौत भी आया, तो सद इफ़्तेख़ार आया ।।

साक़ी की निगाहों ने कर दिया मदहोश
गुलशने हस्ती पे छाया निखार आया ।।

शामे इन्तेज़ार आई शब सरापा इन्तेज़ार आई
बदरे कामेल भी आसमाँ पर बहरे इन्तेज़ार आया ।।

ऐ अद्ल व इन्साफ़, तू बता कहाँ है तेरा पता
बसती बसती सहरा सहरा तुझ को पुकार आया ।।

मोसम था खुश गवार और साक़ी था मुसतइद
घटावों का साथ साथ लिए अबरे बहार आया ।।

जामे इश्क़ था या मैं बेख़ूदी में मस्त था
सहर हसीं का शाकेर पे कैसा खुमार आया ।।

15 ग़ज़ल

बहार व चमन के वह लैल व नहार मेरे हैं
ये हसी रातें सुबाह के आसार मेरे हैं ।।

बद्रे कामेल अंजुम व ख़ुर्शीद मेरे हैं
सहेरा तो सहेरा वह गुलज़ार भी तो मेरे हैं ।।

वह आबेद हैं जाहेद हैं मेरे रफ़ीक़
उस के बन्दे गुन्हेगार भला मेरे है ।।

तुफाँ भँवर और गज़बनाक लहेरें
बहेर, कश्ती, और पतवार मेरे हैं ।।

ये जमा व जमी ये कायनात का आलम
दिल नशी बज़्म के सिंगार ही तो मेरे हैं ।।

हर संगे राह भी मेरा रहेबार भी
और वह राह के गुबार मेरे हैं ।।

इन्साँ दोस्त और इन्साँ नवाज़
वह सभी लायक़े एतेबार मेरे है ।।

गुल व बुलबुल से दोस्ती आपनी
वह बियाबाँ व ख़ारज़ार मेरे हैं ।।

हासिले ज़ीस्त, नज़रे करम उनकी
वह दामने गोहर बार मेरे हैं ।

नाज़ अपनी मुक़द्दर पे इसतराह शकेर
देखिए रहेमते किर्दगार भी तो मेरे हैं ।।

16 ग़ज़ल

कलयों को अपने फूल दिलकश बना के देख
फिर हौसलों को अपने फ़िज़ा मे उडा के देखा ।।

महेफ़िल को मेरेतू दिलरुबा बना के देख
और दर्द का मेरे दरमाँ बना के देख ।।

है दीदार की तमन्ना, तो खुद को मिटा के देख
मिल जाएगी ख़ुदाई तसवउर जमा के देख ।।

खुल जाएगा भरम तेरी ज़ोर आज़माई का
हिम्मत है गर ज़रा, तो नज़रें मिला के देख ।।

ख़श्यों और बज़्म में तो सब होतें है शरीक
तारीकियों में साये को अपना बना के देख ।।

नाकामियों में चिराग़े तमन्ना तु मत बुझा
कोशिशो को अपने ज़रा और बढा के देख ।।

हुस्ने अमल से चमकादे फिर इस जहान को
हुस्ने अमल के कुछ ज़रा चर्चे दिखा के देख ।।

लम्हे निशात का खुल जाएगा भरम
ऐ गुन्चे तू ज़रा खिलखिला के देखा ।।

हंगामा शादी समझ कर इतना ना मचल
तडपते हूए वक्त की सुर्ख कुबा को देख ।।

मेराज की तमन्ना गर दिलमे शाकेर ।
बारगाहे आली मे सर को झुका के देख ।।

23 मुतफ़र्रिक अशआर

ऑह ! दामने अखलाक जब तार तार होगए
फूल भी निगाहों मे बस ख़ार होगए ।

तारिकियाँ कब से महेबुब थी जिन्हें
हूई जब सुबाह कितध्ध शर्मसार होगए ।।

शौक का सरताज है तेरा ख़्याल
चाँद को शरमाए है तेरा जमाल ।

लुत्फ़ की मेराज है तेरा ख़्याल
इश्क़ की मेराज है तेरा विसाल ।।

चाँद भी शर्मा गया एक हुसन बा हया को देख कर
नसीमे सहर ठहेर गयी एक खुश अदा को देखकर ।

ना खुदा ने एक तुफों मे मंजिल ढूंढली
खिज़र भी दंग रहे गए रहेनुमा को देख कर ।।

इस जहाँ से अब ज़ाना है यारो
बस वही अपना सहारा है यारो ।

वह कुव्वते ईमान बाक़ी नही है
वह एहसासे जियाँ बाकी नही है ।।

मैं अकेला ही जन्नत लेके क्या करूँ
मेरे पीछे तो कारवाँ दर कारवाँ है ।

तू ही सरापा उम्मीद वह आस है यारब
तेरी रहेमत का हम पर सायबाँ है ।।

वाए अफ़सोस बडी ख़ता होगई
आज नमाज़े फजर ख़ज़ा होगई ।

तू है रब्बे गफुर में गुन्हेगार हूँ।
बख़्श दे मुझको यारब ख़ता हो गई ।।

24 मुतफ़र्रिक़ अशआर

रात दो तिहाई गुज़र चुकी अब सवेरा बाक़ी है
आसारे सहेर वह देखो ना कुछ अंधेरा बाक़ी है।
ख्वाहिशें मोजेज़न चिराग़े सहेरी भडक रहा है
अब मुसाफ़िर तयार होजा कूच नक़्क़ारा बाकी है ।।

तेरे हात मे है यारब अनाने मौत व ज़ीस्त
तू जब और जिस तरफ़ चाहें उधर को मोड दे।
ये यक़ी है के वह सुन्ता है सदा से पहेले
होगी मक़बुल दुःआ मेरी दुःआ से पहेले ।।

लब पे तेरा ही नाम बस ऐ मेहेरबाँ रहे
रतबुल लिसाँ रहें हम जब तक ये जाँन रहे ।
ताहीने जिंदगी ना छूटे वफ़ा का साथ
गरचे इस सफ़र में कई इमतेहाँ रहें ।।

तेरा बन्दा हूँ तेरी बन्दगी के लिये यारब
सरे नियाज़ को ख़ाक पर रखता हूँ मैं ।।
शक्ले मजूसी पे जियूं ये अमर गवारा नही हर गिज़
चहेरे पे अपनेनुरे ख़ैरुलबशर रखता हूँ मैं ।।

मैं तेरा आसी हूँ फिर भी तेरा बन्दा हूँ मैं
तेरी रहेमत पे हमेशा नज़र रखता हूँ मैं ।।

25 मुतफर्रिक अशआर

क्यातेरे अल्ताफ़ व इनायात है यारब
बारे एहसाँ से मेरी गर्दन झुकी जा रही है
ज़िन्दगी भी मतलूब है और मौत भी महेबूब है
दोनों पे जिस का हात हो वह आदमी क्या ख़ूब है

जिंदगी का कैफ़ थोडा सा
जिंदगी का ऐश थोडा सा
लमहा निशात थोडा सा
गुल को सिबात थोडा सा

एक इनक़लाब है जिस की आमद का मुन्तजर
या रब वह निगाहें मोमिन मुझे एक बार दे
आसान नही है हाले मौत और मरना शाकेर
ये इमतेहाँ के बाद वह इमतेहाँ बाकी है

ऐ गोहर अदन कहाँ है तू आवाज़ तो दे
हर सू मुझ को ख़स वहख़ाशाक नज़र आतें हैं
बहर की पहेनायों सेबारमलाई ये सदा
नादाँ लबे साहिल कोई गोहर कहीं पातें हैं

दिल वह दिमाग़ को शादाब किजिए आकर
बहारेनवा से महेकते है फूल गुलशन के
दोस्त ही क्यो दुशमन भी हम को प्यारा है
जिस तराह पहेलूए गुल मे ख़ार भी गवारा है

मुनाज़र क़हेक़हाँ की बस्ती में रोह हूँ में
दागे इसयाँ को बार बार धोर रहा हूँ में
ये बे हिसी लूट लिए देती है आह ये उमरे अज़िज़
दामने तार तार को अब सी रहा हू में

ह लमहाँ देता है पैग़ामे मौतपयहम मगर
फिर भी जीना है और जी रहा हूँ में
अमले पयहम से बनती है जिंगदगी बेहतर
आग मे जल कर कुन्दन भी निखर आतें है

आदाब व अख़लाक जो बजा लाते है
रुतबे वाला को शाकेर वहीं पाते है
इसतेकलाल हिंमत, जाँबाज़ी व ग़ोता ज़नी
अहेले अज़्म के हम हात, उन्हीं के आते है

26 यौमे आज़ादी

यौमे आज़ादी का आज मना रहे हैं हम जश्न
हर कली खिली है आज फूला हुवा है यह चमन

हर गुंचा पुर बहार है गुल पे आज निखार है
मुसकुरा रही है बज़म् हर शैपे आज निखार है

अहेले वतन के दिल पे आज ख़ुशी का राज है
हर छोटे बडे के सर पर आज़ादी का ताज है

नारों से गुंज रही है फ़िजा
और माहोल सारा जाग उठा

शबे तीर व तार कैसे कटी ये सहर कैसे हूई
अंजुम सद हज़ार मिटे तब कहीं ये सहर हुई

टिपू के अज़्म, लक्ष्मी के बलीदान की क़सम
नौनिहालाने चमन के ज़ान और आन की कसम

जलयान वाला बाग की ख़ुनैन दासताँ की क़सम
जंगे आज़ादी के उन जाँबाज शहीदॉन की क़सम

कई काफ़िले तो लुट गए आज़ादी की राह में
जाने गुँवाईं शौक़ से आज़ादी की चाह में

बापू ने अपने अज़्म से तूफ़ाँ को मोड दिया
दिखाई जुरअतेमर्दाना दुश्मन को तोड दिया

अज़्म व इस्तेक़लाल से दुश्मन सरनिगूँ हुवा
एकजहेती बेमिसाल से हाकेम सरनिगूँ हुवा

शहीदाने वतन के लहु सींचा गया ये चमन
हर सूपुरेबहार है मुसकुरा रही है ये अंजुमन

योमे आज़ादी का आज मना रहें हैं हम जश्न
हर कली खिली है आज फूला हुवा है चमन

27 चाँद

ऐ माहेताबाँ खुल गया तेरा भरम
परतवे ख़ुर्शीद से चमकता है तू क़सम

चमकता तू मगर ये चमक तेरी नही
मुस्तआर है ये रोशनी ख़ुद तेरी नही

नाज़नीनों को महजबीं कहते थे हम
और अब उन्हें क्या कहें इस का ग़म

देखना हर सू ये दाग़ धब्बे ये पहाड व ग़ार
तेरे चहेरे पर कितने हैं वह नक़्श व निगार

अहेले साईस ने तुझ पर क्या सितम कर दिया
हसीनों को अब तुझ से बहोत बदज़म कर दिया

तेरी ख़ामूशी व हुस्ने अमल का गिरविदाह हूँ
गर तू मज़लूम सही दिल से तुझ पे शैदा हूँ

हूसने अज़ल की तू हसीं तख़लीक़ है प्यारे
मौजेज़ा शक़्क़ुल क़मर की तफ़सीर है प्यारे

शबे तीर व तार मे रहेबर है तू
महेफ़िले शब का वाक़ई क़ैसर है तू

ईदे हिलाल बन कर चमका है तू उफ़क पर
देखते है सायम तुझ को हाँ उफ़क पर

देख कर तुझ को समंदर भी झूमता है लाकलाम
बहेरे मव्वाज मे तूफ़ाँ की परवरिश का निज़ाम

तारों भरी रात कितनी सुहानी
इस पर तेरी अजब हुकमरानी

महेबूब हमसफ़र यह ठंडी ठंडी हवाएँ
नग़मेय मोहब्बत फिर क्यों ना गुनगुनाएँ

कैसी मुशामे जाँ है रात राणी की बहार
मुसकुराती है मोहब्बत खिल उठता है प्यार

बदरे कामेल हो तो आशिक़ों की ईद होती है
और ईदे हिलाल हो तो ईदे सईद होती है

शबे वस्ल की बहोत बढ जाती है तुझ से रौनक़
एक आसमाँ पे तू है और जमींपे उनकी रौनक़

ये बता दरीचो से क्याँ झाँकता है तू
क्या दो दिलों की मोहब्बात को आँकता है तू

हाँ बेशक तू गवाह है शबे रौशन के अफ़सानोंका
पहोंचा अपनी मंज़िल की तरफ़ काफ़ेला अरमानों का

तेरी कशिश से शाकेर बहोत बेक़रार है
बदरे कामेल के लिए सरापा इंतजार है

28 मेहेरे ताबाँ

ऐ मेहेरेताबां उफ़के आसमाँ पर तू है जल्वाह फ़गन
ज़र्रा ज़र्रा पुर नूर है रौशन हो गया सारा गगन

तेरी आमद से रौशन हो गया ये सारा जहाँ
तू जब आजाए जो फिर तारीकी रहेती कहाँ

मख़ज़ने नूर व हरारत है क्या ही जिंदगी तेरी
ख़लक की ख़िदमत मे बस दवाँ है जिंदगी तेरी

मज़हरे क़ुदरत का एक ताबंदा निशाँतू है
मुस्तइद बेलोस मंजिल की तरफ रवां तू है

तेरा फ़ैज़े आम देता है तेरी अज़मत का पता
क्या शीरीं समर हैं और फूलों मे रंग वह बू

गर्दिश मे तेरी मुज़म्भिर है राज़े ज़िंदगी
सुबाह दोपहर और फिर क्या शामे ज़िंदगी

29 गुले मुतबस्सुम

ऐ गुले मुतबस्सुम तेरा तबस्सुम इस चमन की आरज़ू है
हर शजर की, हर बर्ग की, हर शाखे गुलशन की आरज़ू है

तेरे मुस्कराने से मुसकुरा उठता है ये गुलिस्ताँ
जिस तराह आमदे महेताब पर मुसकराए आसमां

खुलूस और मोहब्बात का एक पैमाना है तू
इस फ़सले बहार के लिए एक नज़राना है तू

साने कुदरत की तू एक हसीं तखलीक है
रंग व हूस्न और नज़ाकत मे सब तुझ से हीच है

पेवस्ता शजर से रहेकर तूने शबाब पाया
की बहुत कुछ तरक्क़ी और फ़ैज बे हिसाब पाया

गुल से समर तलक थी तेरी जिंदगानी
फिर तुख़्म ने पाई हयाते जावे दानी

शमीमे बाग़ भी तेरा नाज़ उठाती है हर दम
तेरी ख़ुशबू को हर सू फैलाती है हर दम

तेरा हूस्न है दावते नज़्ज़ारगी सरापा
रंगत नई हूस्न नया और नज़ाकत सरापा

30 गुलाब

चमन मे क्या धूम मची है गुलाब की
फूलों के ताज हुस्न मे लाजवाब की

हर बर्ग व गुल से कैसी नज़ाकत टपकती है
हर पंखडी से कैसी ख़ुशबू महेकती है

सब्ज़ पत्त्यों मे कोई चहेरा गुलाब है
या सब्ज ओढणी मे कोई लाजवाब है

हर गुंचे मे गुमाँ होता है नाज़ुक लबी का
हर गुल मे तमाशा है तेरी बुलअजबीका

किस अदा से कोई दोशीज़ा मुसकरा रही है
या कोई परी सब्ज़ क्या जल्वाह दिखा रही है

परतवे खुर्शीद से रौशन हुवा शबनम का नगीना
या शर्म से अर्क़ रेज़ हूई कोई प्यारी हसीना

जाग उठती है दिल की वह पिनहांयाँ
देख कर तेरे वह हूस्न की रानाइयाँ

मिसले शमा चमन मे तेरा क्या एहेतराम है
वह हर शजर हर बर्ग व गुन्चा तेरा ग़ुलाम है

तारीख़े गुलिस्ताँ मे ये तो मशहूर नाम है
वह बुलबुल भी तेरे हुस्न के आशिक़ क़ा नाम है

हर सख़्त दिल को राम करती है लताफ़त
हीरे का जिगर चाक करती है नज़ाकत

महेबुब के मिज़ाज का तू तरजुमान है
उठते हूए शबाब का प्यारा निशान है

ख़ुशबूए गुल क्या ही मस्तानी हूई
तितली भी तेरे हूस्न की दिवानी हूई

बहारों के साथ चढ रहा है तेरा शबाब
वाह रंगीनीयों मे डूब गॅए तख़्तए गुलाब

तू मुसकराता है तो मैं खिलखिलाता हूँ
तेरे हूस्न को देख कर मचल जाता हूँ

गुलिस्ताने शाकेर का हसीं नज्जारा
बडा रूह परवर बडा प्यारा प्यारा

तेरा तबस्सुम दावते इनतेशार है गोया
इस के बाद हस्ती मिस्ले गुबार है गोया

हाय जिंदगी यह अंजामे जिंदगी क्या है
सिर्फ़ एक तबस्सूम के सिवा ताज़गी क्या है

31 शबनम

कोई शोला सा लगे है कोई शबनम
क्या क्या तख़लीक़ात हैं उसकी ऐ मोहतरम

आरेज़े महेबूब पर बिखरें हैं मोती
जिस तराह सुर्ख़ गुलपर चमके है शबनम

गुलों ने बावुज़ू होकर ताज़गी पाई
ज़िक्र ख़ालेक का किया की हम्द सराई

सुबहदम शबनम ने वुज़ू का जो एहतोमाम किया
संूबूल सजदा रेज़ हूई शजर ने कियाम किया

अहेले गुलिस्ताँने इबादत का इंतेज़ाम किया
चिड्यों ने छेडा तराना तसबीह का इलतेज़ाम किया
हर फूल मुस्कुराया हर शाख़ लहेलहाई
आबे शबनम से हर एक ने हासिल की सफ़ाई

कमल के फूल सतेह आब पर मुसकुराने लगे
वह शबनमी मोती भी उन पर इतराने लगे

गुल व लाला व सब्ज़ा की शादाबी
हूई शबनम से इन की सैराबी

कितनी ख़ामूश, कितनी, फ़ैय्याज़ है शबनम
मोहब्बत की व मम्ता की लाज है शबनम

उस ने अहेले गुलीस्ताँ को दूध पिलाया है
जभी तो इस गुलिस्ताँ पे शबाब आया है

लाला वह गुल मे ठंडका का इंतेज़ाम है
शबनम क्या, खुलूस व मोहब्बत का पैग़ाम है

देखो कितनी हस्सास और बा हया शबनम
खुर्शीद के आते ही छूपने लगी शबनम

वह फ़ैजे शबनम का हर सू ख़ास व आम है
खुदा की एक नियमत मुफ़ीदुल अनाम है

32 तितली

वाह आशिक़े गुल का एक नया अंदाज देखना
हर लमहा मे कई रुख़ पर परवाज़ देखना
तेरा वजूद आईना ए चमन
हर नक्शे पर दास्ताने चमन
आराएशे चमन का तू बाब है
तेरा हूस्न चमन का शबाब है
गुल सद चाक को कितनी महेबूब है तू
हर चष्म कदरदाँ को मतलूब है तू
आराएशे चमन का तू बाब है
तेरा हूस्न चमन का शबाब है
हर नक़्श पर चमन का एक आईना सा है
और हर पर गोया एक गुलिस्ताँ सा है
मुन्हनी परवाज़ मे क्या जिंदगी अयाँ है
एक आन मे यहाँ एक आन मे वहाँ है

सादगी मे तेरी क्या खूबियाँ जमा हैं
न्हन्ने से वजूद मे फ़ितरत के निशाँ हैं.
तेरा मशग़ला एकतसाबे गुलशन
तू खोशा चींफ़े ज़ाने गुलशन
बढाई तूने शाने गुलशन
आफ़रीं है तुझ पर आने गुलशन
सानेक़ुद्रत की हसीं तखलीक है तू
न्हन्नी मुन्नी क्या बेहेतरीन मख़लुक है तू
न्हन्ने मुन्ने हसींन बच्चे जमीं के तारे
ताआक्क़ुब मेफिरते हैं मारे मारे
कोई परीख़ाने की हसींन मकलूक है तू
चमन के मकीनों का मतलूब है तू
आशिक़े गुल है तू भँवरा भी दीवाना
दोनों का वतन, यां आबोदाना
किस क़दर बला की चालाक है
हसीं और बहोत बे बाक है

33 दिल जलाव के रौशनी होगी

राज़ी होगा उन से रब्बे क़दीर
जिन को शैतॉं से दुश्मनी होगी

बख़्शवायेंगे उन्हें शाहे उमम
जिन के आज़ामें रौशनी होगी

सुबहदम हम आईना से पूछें
चहेरे पे क्यों खूब ताज़गी होगी

रक़्स होता रहेगा ऐश खानों में
तबीहे रब, सुनी अन सूनी होगी

लबे बाम बदरे कामेल की वह नैरंगियाँ
जमीं पे नूर की चादर तनी होगी

दायते शिराज़ा उडाएँगे अहेबाब
बज़्म रंगी मे, बना होगा बनी होगी

ज़ुलमते जहेल का दौर दयराह है
शमए इल्म जलाय केह रौशनी होगी

एतेराफ़े हक़्क़ से है जिन को गुरेज़
दिल मे सक़म उनके, कजी होगी

रोज़े महेशर अफ़रातफ़री मची होगी
हर नफ्स को अपनी पडी होगी

सब अबनाए आदम, भाई हैं शाकेर
ख़ुशी भी आपकी, अपनी ख़ुशी होगी

34 जूगनू

शामे बरसात मे हर तरफ़ व हर सू
जिधर भी देखिए बिखर गए जुगनू

शामे बरसात हमें बहोत भाई
जुगनोवों की बारात दि दिखाई

आवारा गर्द फ़िरतें हैं ये हवा में
अशरार है केह गोया उडतें है फ़िजा में

बज़मे आसमां की रौनक़ वह तारें
जमीं के लिए हैं हसीं ये नज़ारे

अनवार की वह बारेश है महेकते हूए चमन में
शब, मोती लुटा रही है महेकते हूए चमन में

कलियाँ चटक कर फूल बन रही हैं
जुगनू की बारात रक़्स कर रही हैं

काशानै चमन का आलम निराला
जुलमत के गले मिलता है उजाला

आतिष बाजी को आसमाँ पे देखा
ये भी देखलेना तुम जाके चमन में

रौनक़े गुलिस्ताँ के ये हैं सीमाब पारे
चष्मवासे देखो क्या हसीं हैं नज़ारे

ज़ुलमते शब कोईतक़रीब मना रही है
इस लिए परियों की बारात जा रही है

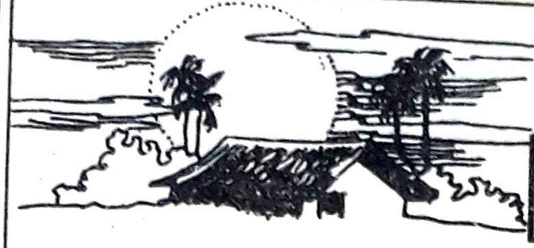
महफिले शब जगमगा रही है
रौशनी हर तरफ़ फैली हूई है

गर्दिश मे ऐसी सुरअत देखी नही किसी की
एक आन मे तेज़ हरकत देखी नही किसी की

हरकत मे जिंदगी समझाए जारहें हैं
उफ़क़े जहाँ पर वह छाए जा रहें हैं

क़ुदरत का देखिए ख़ूब इंतेज़ाम
मन्ज़रे हसीं में है लुतफ़े दवाम

शाकेर के दिल पर इस का असर है
क्या ख़ूब मन्ज़र हुसने नज़र है



35 बरसात

ये हसीं रुत बरसात की जब आई
हर सू कली कली बहोत मुस्कराई

बादल घिर के आए हैं आसमां पर
अंधेरा छा गया हर सू फ़िजा पर

देखो घनघोर घटाएँ उमड उमड के आरही हैं
बादल गरज रहें हैं और बिजल्याँ चमक रही हैं

थोडी ही देर मे वह देखो बारेश का समाँ
ये ठंडी ठंडी हवांएँ और बादो बाराँ

चमक के साथ वह देखो मुसलसल बारेश हो रही है
ये जमींन पे जल थल तेज पानी की रौ बहे रही है

है बाग़ व बहार का ज़माना बरसात का ज़माना
कोयल यहाँ कूकती है वहाँ बुलबुल का आशियाना

सब्ज़ा लहेलहाया और हर कली कली मुसकुराई
मैदाँ मे क़ुदरत ने मख़मली चादर बिछाई

उफ़के आसमां पर धनक की नौरंगियाँ
नीचो बाग़ो मे झूले और रंग रलयाँ

अभी तक तप रहें थे जमीं व आसमाँ
उस की रहेमत ने डाली जाँ मे जाँ

सूखी ज़मीं ख़ूब सैराब हूई है
ठंडक आई गर्मी नायाब हूई है

ख़ुन्क और ठंडी ठंडी हवाएँ
पाणी बर्सा निखर गई हैं फिज़ाएँ

पपीहे की पी कहाँ दिल को भाई
वह मेंडक के टर्राने की सदा आई

ताऊस रक़्साँ हैं सहेरावों में
तयूर चहेचाहते हैं फिज़ावों में

हर सू सब्ज़ा है कोह व बियाबाँ पर
मख़मली चादर बिछी है मैदाँन पर

देख कर आमदे बादव बाराँ
ख़ुश हो गया ये ग़रीब दहेकाँ

मुर्दा ज़मीं में ख़ालेक़ ने जॉन डाली
ख़ुश है हर पत्ता पत्ता डाली डाली

मखलूक़े ख़ुदा मुंतज़िर थी इस की
हर शजर वह हजर को चाह थी इस की

36 धनक

देखो फ़िज़ा बाराने रहेमत से किस क़दर धुल गई
ये सब्ज़ा ज़ार जाग उठा और हर कली खिलगई

शुआए ख़ुर्शीद ने ख़तरों से हाँ
वह देखो हसीं बनादी है कमाँ

नीले शफ़्फ़ाफ़ आस्माँ पर खुर्शीद ख़नदाह ज़न
वाह मुक़ाबिल में दिखाई उस ने अपनी भबन

देखो नज़ाराह धनक कितना प्यारा प्यारा है
हर छोटा बडा इस क़दर महवे नज्ज़ारा है

ये सत रंगी धनक सब को भाई
हर निगाहे पुर शौक़ का दिल लुभाई

रंगो का अंदाज तो देखो किस क़दर मिल रहे हैं
मोहब्बत से मिल कर गले वहबाहम फिसल रहें हैं

ज़ीनते फ़लक खूब बढाती है धनक
वक़्ते मुख़्तसर के लिए आती है धनक

थोडी देर मे वह रंग हवा होजाएंगे
देखते ही देखतें मुनतशर फ़िज़ा होजाएंगे

जिंदगी भी है इस तराह बहारों का रंगीसमाँ
कुछ कर ले शाकेर, वरना पछताए गा कल वहाँ

37 शजर कारी

देखो बर्खा का मोसम कितना सुहाना है
अब तो हमें शजर और पौदें लगाना है

दरख़्त और पौंदो से राहत मिले गी
वह फल फूल देंगे और ठंडक मिलेगी

इन के साये मे दम लेंगे सब इन्साँ
धूप और लूसे बचाएंगे वह जाँ

परिंदे चहेचाहेंगे उनकी डांलियों पर
वह बसेरा भी लेंगे उन की डलियों पर

जिस ने पौदा लगया क्या बडा काम कर गया
खुद पर आने वालों पर एहसान कर गया

पुर्खोने कभीं जो लगाए थे पौदे
घने पेड बन गए आज वह पौदे

ताज़ा हवा मे क्या मज़ा आ रहा था
वरना आलूदगी से दम घुटा जा रहा था

हवा साफ़ होगी और बारेश ख़ूब होगी
जमीं ज़रखैज़ और ख़ूब मज़बूत होगी

अब दरख़तों को हर सू लगाएंगे हम
हर ख़ित्ताए वीराँ को चमन बनाएंगे हम

शाकेर, तुम भी ग़फ़लत में ना रहेना
वरना गुज़र जाएगा बारिश का महीना

38 जनाब मौलवी सहाब

तबियत जो घबराई चले आए जनाब मौलवी सहाब
लिए तावीज़ लिखाई चले आए जनाब मौलवी सहाब

सब के नौ मौलूद को अज़ाँ के लिए आएँ जनाब मौलवी सहाब
रसमें अक़िक़ा के लिए भी बख़ूशी आएँ जनाब मौलवी सहाब

तसमिया ख़ानी के लिए आएँ जनाब मौलवी सहाब
फिर निकाह ख़ानी के लिए आएँ जनाब मौलवी सहाब

कुरआन पढाएँ तो जनाब मौलवी सहाब
गुस्ल भी सिखाएँ तो जनाब मौलवी सहाब

ख़ुतबा पढाने के लिए जनाब मौलवी सहाब
इमामत के लिए आगे हैं जनाब मौलवी सहाब

ईमान सिखाने के लिए जनाब मौलवी सहाब
ईमान बचाने के लिए जनाब मौलवी सहाब

क़रीबुल मर्ग वक़्ते निज़ा सुरैह यासीन तिलावत के लिए
बिला तकल्लुफ़ व बख़ुशी चले आएँ जनाब मौलवी सहाब

गुस्लें मय्यत को दिलाएँ तो जनाब मौलवी सहाब
क़बर तक पहोंचाने आएँ तो जनाब मौलवी सहाब

फ़ातिहा के लिए तय्यार हैं जनाब मौलवी सहाब
इस काम मे बडे हुशयार है जनाब मौलवी साहब

हर तक़रीबे शादी वह ग़म में हैं दिल से वह शरीक
कितने मोईन व मददगार हैं जनाब मौलवी सहाब

पिदरे मोहतरम

पिदरे मोहतरम तुम्हें पाऊंगा किस तराह
वह गोहरे नायाब दिखलाऊंगा किस तराह
अब दिल को अपने समझाऊँगा किस तराह
अब अब्बा जान को बतलाऊंगा किस तराह

पिदरे मोहतरम तुम कहाँ पर चले गए
हम सब को बहोत रुला कर चले गए

सब मिलतें हैं आप की तसवीर नही मिलती
और भटक रहा हू कोई तन्वीर नही मिलती
बे मिसल मोहब्बत की तासीर नही मिलती
ममता और उलफ़त की नज़ीर नही मिलती

पिदरे मोहतरम तुम कहाँ पर चले गए
हम सब को बहोत रुला कर चले गए

तुम्हारी शक्ल से अजीब ताज़गी मिली मुझको
तुम्हारी ज़ीस्त से एक जिंदगी मिली मुझको
गुम करदाह राहों में रहेबरी मिली मुझको
मीनारे नूर से एक रौशनी मिली मुझको

पिदरे मोहतरम तुम कहाँ पर चले गए
हम सब को बहोत रुला कर चले गए

तुम्हें देख कर फूला नही समाता था
बहोत ही नाज़ से में मुसकराता था
एक इशारे पर हूकुम बजा लाता था
कहीं सर और आप के पाऊँ दबाता था

पिदरे मोहतरम तुम कहाँ पर चले गए
हम सब को बहोत रुला कर चले गए

बहोत ही दुःआएँ साथ है फिर भी
तख़य्युल की दुन्याँ आबाद है फिर भी
अश्को का जहाँ आबाद है फिर भी
और सआदत पर मुझ को नाज़ है फिर भी

पिदरे मोहतरम तुम कहाँ पर चले गए
हम सब को बहोत रुला कर चले गए

40 माँ की अज़मत

आज तक तुझसा मेहरबाँ कभी देखा नही
ऐसा मोहब्बत का निशाँ कभी देखा नही

मेरे वजूद का तू बायस बनी
परवरिश का मेरे बायस बनी

तेरे ममता के साए मे मैं तो बढता रहा
तेरी आग़ोश मे पल कर जवाँ होगया

तेरे शीर व आग़ोश का कोई मुतबादल नही
तेरे लाड व प्यार का कोई मुतबादल नही

तू मसीहा है मेरे दर्द वह आज़ार में
तू तसकीन दिल है मेरे इफ़कार में

मेरे मुस्तक़बिल की तू खै़र ख़्वा थी
मेरी भलाई वह फ़लाह तेरी चाह थी

इस जहाँ मे तुझ सा कोई पाया नहीं
तेरी ममता का हासिल कोई साया नहीं

आज तक मुझको वह लज़्ज़त के निवाले याद हैं
तेरी शफ़क़त वह मोहब्बत के निवाले याद हैं

तेरे क़दमो तले मेरी जन्नत है
तेरी ख़ुशी मे मुझ को राहत है

शादाबिये चमन तेरी दुःआओं से है
दर्खशानीय गुलशन तेरी दुःआओं से है

तू निगरां थी मेरे उन कमालात की
तू निगेहबां भी थी मेरे अख़लाक़ की

तू ख़ैर खवाह थी बेशक मेरी ज़ात की
और मलजाव मावा थी मेरी आस की

तेरे वजूद से ये जहाँ रौशन है
हर सू बहार है महेकता हुवा चमन है

तेरा वजूद ग़निमनत है दिल व जाँ के लिए
एक रहेनुमा तो चाहिए कारवाँ के लिए
तेरे बग़ैर ये कशती बे पतवार है
तेरे बग़ैर ये ज़िंदगी दुशवार है

रब ने मूसा (अ) को यूँ मुख़ातिब किया
संभल कर चलना ऐ मूसा तुम ज़रा

दुःआ ओंके लिए अब कोई सहारा नही
वह माँ मर चुकी, जिस से कोई प्यारा नही

हर मुहीम के पीछे तेरी जात थी
हिम्मत थी ताक़त थी आवाज़ थी

फ़रमाने रब्बी तेरी ताईद में है
फ़रमाने नबी तेरी ताईद में है

माँ पर किसी और को तरजीह ना देना
वरना ताज़ीस्त पडेगा रोना

माँ बाप का जिस जिस पर इताब हुवा है
वह ना कभी सर सब्ज़ और शादाब हुवा है

हुकुम उफ़ करने का तुम को हरगिज नही है
तेरी तकलीफ़ गवारा हरगिज़ नही है

माँ की अज़मत

वह दो जहाँ मे सुर्ख़ रू जिसको तू दुःआ दे
वह बद बख़्त नामुराद हु जिस को तू बददुआ दे

तेरी वह दुःआ फ़ैसल है दो जहाँ में
ज़ालिम को पनाह नही है दो जहाँ में

पैम्बार औलियाह कलंदर और शाह
सब तेरी गोदी मे पले बढे हैं

हर दीन वह मज़हब तेरे मद्दाह खाँ
तेरी पाकीज़ा मोहब्बात के है सब सना खाँ

वह ख़ुश नसीब हैं जिन पर तेरा साया है
वह रोता है जिस ने तुझ को खोया है

हुक़ूक़ के बारे में डरो रब से
और हुक़ूक़ अदा करो सब के

भाइयो सब के हुक़ुक़ सब को देदेना
मगर माँ पर किसी को तरजीह ना देना

जो इस नियमत से महेरूम इस की तलाफ़ी
मुसलसल तौबा व अस्तगफ़ार व माफ़ी

शाकेर भी अर्ज़ करता है बचष्म पुरनम व नाशाद
भाइयो मेरी माँ को रखना दुःआओं में याद

41 हुब्बे वतन

वतन की मोहब्बत निस्फ ईमान है
ये नबिए रहेमत का फ़रमान है
वतन पर तो सब कुछ कुरबान है
वतन की मोहब्बत की येह पहेचान है
वतन की मोहब्बत है जान व तन में
बुलबुल है शादाँ अपने चमन में

इस ख़लाई दौर में हम पीछे कहाँ
सफ़र जारी रहेगा सूए आसमाँ
पृथ्वी अग्नी वह आग्या भट
मसाई कहाँ होगी येह राएगाँ
वतन की मोहब्बत है जान व तन में
बुलबुल है शादाँ अपने चमन में

जन्नत का मज़ा मिलता है बिया बॉ व बन में
गुलज़ार खिला रहेता हैं हर कोहे सहेन में
लबरेज़ है क्या मेहेर व वफ़ा गंग व जमन में
क्या क्या नही मिलता बता मेरे वतन मे
वतन की मोहब्बत है जान व तन में
बुलबुल है शादाँ अपने चमन में

घटाँवों को साथ साथ लिए आती बर्खा
कोंदती है बिजली इस तारीक गगन में
कूकती है कोयल बियाबाँ व बन में
रक्साँ हैं ताऊस सहेरा व बन में
वतन की मोहब्बत है जान व तन में
बुलबुल है शादाँ अपने चमन में

परिन्दों की चहेक व गुलज़ार का महेकना
लाला व गुल से वह सहेराह का दहेकना
आफ़ाक़ मे चाँद सितारों का चमकना
खेतों मे फ़स्लों व सब्ज़े क़ा लहेकना
वतन की मोहब्बत है जान व तन में
बुलबुल है शादाँ अपने चमन में

बर्फ़ पोश ऊंचे कुहसार के सिलसिले
येह जंगलात व अशजार के सिलसिले
येह मौसम व बाग़ व बहार के सिलसिले
येह औलियाह और औतार के सिलसिले

हुब्बे वतन

अमन वह शांती रिवायत है इस की
दोस्ती वह मोहब्बत आदत है इस की
सभी को समोना सीरत है इस की
रवादारी प्यारी ख़सलत है इस की

वतन की मोहब्बत है जान व तन
बुलबुल है शादाँ अपने चमन में

ऐ मेरे वतन की प्यारी ज़मीं
जहाँ मे तेरा कोई सानी नहीं
बहोत ही पुराने हैं तेरे मकीं
सदियों से बसतें आए हैं यहीं

वतन की मोहब्बत है जान व तन
बुलबुल है शादाँ अपने चमन में

तहेज़ीब व तमद्दुन का येह गेहवारा
उफ़के जहाँ पर अमन का सितारा
हर भारती की आँख का है तारा
देश हमारा, बहोत प्यारा प्यारा

वतन की मोहब्बत है जान व तन
बुलबुल है शादाँ आपने चमन मे

क्या आमदे बहार है गुलज़ारे चमन में
फूलों पे निखार है गुलज़ारे चमन में
बुलबुल भी चहेकती है गुलज़ारे चमन में
बादे सबा चलती है गुलज़ारे चमन में

वतन की मोहब्बत है जान व तन
बुलबुल है शादाँ अपने चमन मे

गाँव से आबाद है जमीने वतन
जरखेज़ पुर बहार है ज़मीने वतन
फ़सलों सें गुलज़ार है ज़मीने वतन
सोलाह सिंगार है जमीने वतन

हुब्बे वतन

वह घंघोर घटाओं का येह मसकन
कोयल की सदावों का येह मसकन
रुह परवर फ़िजावों का येह मसकन
हसीन दिलरुबावों का येह मसकन

वतन की मोहब्बत है जान व तन में
बुलबुल है शादाँ अपने चमन में

सरहद की हिफ़ाज़त का जो काम करते हैं.
मुल्क व क़ौम का रौशन वह नाम करते हैं.
वतन की तारीख़ मे दर्ज वह नाम करते हैं.
हम इन सपूतों का का एहतराम करते हैं.

वतन की मोहब्बत है जान व तन में
बुलबुल है शादाँ अपने चमन में

वह से सिम्त साहिल क़ुदरती सहारा
जानिबे शुमाल हिमाला संत्री हमारा
दकन मे एलोरा व अजंता हमारा
लाल किला व ताज हैं जमना किनारा

वतन की मोहब्बत है जान व तन में
बुलबुल है शादाँ अपने चमन में

कहाँ गांधी वह नेहरु से मुहिब्बे वतन
काश मिल जाएँ ऐसे अमन के निशाँ
और सब अहेले वतन हों शादाँ वह फरहाँ
और येह गीती बने जूँ जन्नत निशाँ

वतन की मोहब्बत है जान व तन में
बुलबुल है शादाँ अपने चमन में

मुख़तलिफ़ मज़ाहिब व जबाँ इस की शान
इख़तेलाफ़ में वहदत है इस की पहेचान
एक जहेती व अख़ुव्वत में है इस का नाम
अबुल कलाम और कलाम, इस की ज़बान

वतन की मोहब्बत है जान व तन में
बुलबुल है शादाँ अपने चमन में

ग़ज़ल २१

सद इफ्तेकार	बुहुत ज्यादा नाज़, फख़र
माशूक	जिससे मोहब्बत की जाती है
शबे इंतेजार	इंतेज़ार की रात
अद्ल	न्याय
मुस्तईद	सावधान, तय्यार
खुमार	नशा
जामे इश्क़	मोहब्बत का जाम

ग़ज़ल २२

अहेलेनज़र	परखने वाले
अहेलेहुनर	हुनर वाले
शाह	बादेशाह
शाहगर	बादेशाह बनाने वाले
सदफ़	सीपी, शंख
निहाँ	छुपा हुवा
गुहर	मोती
हीच	कमतर, छोटा, मामूली
रिश्ते दर्द	हमदर्दी
फ़रोग देना	बढावा देना
सई पहैम	लगातार कोशिश
ज़ेर व ज़बर	बर्बाद, नाबूद
अज़ीज़	रिश्तेदार
दिल व जिगर	प्यारे
सुर्ख़रू	मशहूर
बामुराद	कामियाब
मुती	आदेश का पालन करने वाले
मंजूरे नज़र	प्यारे, पसंदीदा

अभिप्राय

मौलवी मु. ज़ुबेर अहमद साहब (B.Sc.,M.A. B.Ed.)

ईसार व क़ुर्बानी	बलीदान
पिनहाँ	छुपे हूए
सहेर अंगेज़	जादूभरे, असर करने वाले, प्रभावित करने वाले
मुहिब	प्रेम करने वाला
तालेब	चाहने वाला
मतलूब	जिससे प्रेम किया जाता है, जिसकी चाहत हो
मलकूती तखय्युल	पाकीज़ा ख़्याल व सोचने का ढंग
तहरीक	किसी काम या उद्देश को हासिल करने का जज़बा
बदरजा अतम	मुकम्मल तौरपर, पुरी के पुरी

दुआ

सरकार (स.ह.)	हजरत मोहम्मद वैगंबर (स.अ.स.)
हूसूल	हासिल करना
रिज़्के हलाल	खरी कमाई
शेवा	काम
कारुन	कंजुस
अद्ल	न्याय
अद्ल फ़ारुकी	हज़रत उमर फारुख़ (रजि.) का न्याय
पेशेनजर	समक्ष
मन्जूरे नज़र	पसंद
नक़्श फिरऔन	फिरऔन की तऱ्हा
हवाए तुन्द	नामुनासिब व परेशानी की फिज़ा, माहोल
दुख्तरान	बेटीयाँ
हव्वा	हज़रत आदम अ. की बीबी
राहत	आराम, खुशी
अरजाँ	सस्ता
अक्साए आलम	संसार
अमनकी दौलत	खुशहाली की दौलत
इताअत	आदेश का पालन करना
सरबसुजूद	सजदे में
मक़बूल	मंजूर, कुबूल
नौनिहालाने चमन	नौजवानाने आलम
तौफ़ीक़	हिदायत
शीर व शकर बनके रहना	मिलजुल कर रहना
ख़िदमत	सेवा
ख़िदमते ख़ल्क़	जनसेवा
अहलेवतन	देशवासी
जहाँ	संसार

आँखें

आँखें कुदरत का क़ूब अतिया कारख़ानाए बदन में
कायनात का मुशाहेदा होता है चष्मे ज़दन में

जब चष्मे करम होता है रब्बे क़दीर का
चहेरे पे हूस्न और यह अन्वार हैं आँखें

जज़बात की येह आईना दार हैं आँखें
कभी यह शबनम कभी यह शोला बार हैं आँखें.

कभी एक़रार हैं आँखें कमी इन्कार हैं आँखें
क्या कुदरत है ख़ुदा की शाहकार हैं आँखें

रूह व बदन की निगराँ कार हैं आँखें
कितनी प्यारी कितनी, ग़मगुसार हैं आँखें

चहेरो पे हुस्न व येह निखार है आँखें
क्या कुदरत हैं ख़ुदा की शाहकार है आँखें

सद आफ़रीं है उन आँखों पर यारो
जो क़ौम व मिल्लत के लिए अश्कबार हैं आँखें

कितनी मुसतइद कितनी बेक़रार हैं आँखें
सरहद व नामूस की चौकीदार हैं आँखें

कभी प्यासी मोहब्बत की तलबगार हैं आँखें
महेबूब के लिए, सरापा इन्तेज़ार हैं आँखे.

कभी मुज़महिल कमी बीमार हैं आँखे
कभी दरपै वह आज़ार हैं आँखे

होती हैं जब वह चार आँखें
दिल दे बैठीं, वह यार आँखें

सर सय्यद ने क्या पते बात कही
दोंनो, दुल्हन की सिंगार हैं आँखे

कभी मदहोश हैं, पुर ख़ुमार हैं आँखे
एहसासे नदामत से शर्मसार हैं आँखे

वह शूख़ी व चंचल और वह अदाएँ
शूख़ी व शरारत का इज़हार हैं आँखे

नज़र झुकाके चलो ज़रा शाकिर
वर्ना आह ! यह बेकार हैं आँखे

आँखे

चश्मेज़दन	पलक झपकनेतक
आईनादार	ज़ाहेर करनेवाली
शोलाबार	आग बरसाने वाली, क्रोधमें
शाहकार	कारनामा
अश्कबार	ऑन्सू बहाने वली
तलबगार	चाहने वाली
मुज़महिल	कमज़ोर
दर पैआज़ार होना	दुख पहूँचाने के लिए तय्यार होना
पुरख़ुमार	नशेमें

गज़ल 9

ख़ूए वफ़ा	वफ़ादारी, इताअत, आदेश का पालन करना
अदा	खूबी, अख़लाक़
दयारे ग़ैर	अल्लाह तआला के सिवा और किसी के द्वार
रूस्वा होना	ज़लील होना
सायल	भिकारी
जव्वाद	दान प्रदान करनेवाला
लुत्फ़ व अता	मेहेरबानी, दया धर्म
लज़्ज़त	मज़ा
अहदे वफ़ा	वफ़ा दारी का वचन
बज़्म	संसार, दुन्या
मन्शा	इच्छा
इलाह	अल्लाह तआला
वक़्ते कज़ा	मौत का वक़्त
विरसय मग़रिब	मगरिबी कौम की गंदी तहज़ीब
दिल से अज़ीज़ रखाना	दिलसे चाहना
हुस्ने अदा	अच्छे अख़लाक़
दावते जिक्र	नमाज़ के लिए बुलाना
रब का मुनादी	अल्लाह के घर मस्जिद को नमाज़ के लिए बुलाने वाला
मौज़्ज़न	अज़ान देने वाला
सदा	आवाज़

43 सहेर ख़ैज़ी

सुबहदम परिन्दे चहेचाह रहे हैं.
खुदा की तारीफ़ के गुन गा रहे हैं
ठंठी हवा के झोंके आ रहे हैं
मुर्ग़ भी बांग दे कर जगा रहे हैं

सहेर ख़ैज़ी खुदा की नियमत है
देर तक सोना बुरी आदत है

क्या रुह परवर हवा आरही है
नसीमे सहेर सब को जगा रही है.
शमा की लू भी झिलमिला रही है.
वह मौज़्ज़न की सदा भी आ रही है.

सहेर ख़ैज़ी खुदा की नियमत है
देर तक सोना बुरी आदत है

इबादत ख़ाने जाग उठे हैं
रब के दिवाने जाग उठे हैं
मस्जिद जाने वह जाग उठे हैं
रब को मनाने जाग उठे हैं

सहेर ख़ैज़ी खुदा की नियमत है
देर तक सोना बुरी आदत है

सुबाह सवेरा हुवा चाहता है
उजाला ग़ालेब हुवा चाहता है
वक़्ते फ़जर ख़त्म हुवा जाता है
नादाँ बता तू क्या चाहता है

सहेर ख़ैज़ी खुदा की नियमत है
देर तक सोना बुरी आदत है

ऑह । वक़्ते सुबाह येह संसान गलियाँ
ख़ामूश हैं मिसले शमशान गलियाँ
खुदा के बन्दों की हैरान गलियाँ
रहेमत से ग़ाफ़िल परेशान गलियाँ

सहेर ख़ैज़ी खुदा की नियमत है
देर तक सोना बुरी आदत है

सहेर ख़ैजी की बरकत बतादो ना इनको
खुदा की रहेमत का पता बतादो ना इनको
खुदा व रुसुल से मिलादो ना इनको
बैठे हो क्या अभी सदादो ना इनको

सहेर ख़ैजी खुदाकी नियमत है
देर तक सोना बुरी आदत है

रुबाइयाते शाकेर

यारब तू हम पर कितना मेहेरबान है
तेरी शफ़क़्क़त वह रहेमत हर आन है
वाए ! अफ़सोस हाए ! मजबूरी
शुक्र के लिए, फ़क़्त एक जबान है

बा ज़ौक और बा तमीज़ को देखा
क़दर दाँ और खुश नसीब को देखा
दिल बाग़ बाग़ हुवा मिसले बाग़े इरम
एक हातिम और खुश नसीब को देखा

मादरे गीती से एकतसाबे फ़ैजान करो
दरख़्त लगाव अमन का क़ियाम करो
नही है यह ख़वाने नियमत के सिवा
सब खाव मिलकर, शुक्र मुदाम करो

ताक़त व जमाल संभाल कर रखना
मिल्क व माल संभाल कर रखना
इन्सान मुकल्लफ़, हैवाँ हैं आज़ाद
इफ़्फ़त को अपनी संभाल कर रखना

पुख़्ता है नज़मे क़स्सामे अज़ल
नही किसी का इस मे कोई दख़ल
कोई शाह और कोई बोरिया नशीं
नादाँ शिकवाह व शिकायत बेमहेल

सुकूँ नहीं, रब की इताअत के सिवा
नाक़िस है ईमान रिसालत के सिवा
कलमे हक़्क़ को दिल व जाँनशी करले
ईमान नही सुन, क़लमेहक़ के सिवा

रुबाइयाते शाकेर

दर्द उठता है दवा रहेने दो
उनका तोहफ़ा है सजा रहेने दो
ग़मे फ़िराक़ से इबारत है जिंदगी
दास्ताँ का सिलसिला है रहेने दो

सवँरते और बिखरते मन्जर देखे
इन्क़लाब ज़माना और बहर व बर देखे
फ़क्त एक पल मे जो पल्टी काया
शाह वह गदा फिर बराबर देखो

समझना किसी को हीच बुरी बात है
अकडना बिगडना बुरी बात है
तकब्बुर ने किया शैताँ को लई
ग़ुरूर व तकब्बुर करना बुरी बात है

फ़र्ज औरत का इताअत करे शोहर की
इसी में ख़ुशी है ख़ुदाए बर्तर की
टकराव में होता है ख़ाना ख़राब
अच्छी बीवी ज़ीनत है सारे घर की

एक रात मैं ने एक ख़ाब सुनेराह देखा
फिर वक़्ते सुबह दमक्ता चहराह देखा
नसीमे सहेर क्यो नाज़ से इत्राने लगी
शाख़े गुल पर न्हन्ना सा फूल रुपेहरा देखा

बग़ैर कमली के रात गुज़र जाती है
बगैर छत्री के बरसात गुज़र जाती है
शेवए मोमिन है राज़ी ब रज़ा रहना
जल्द ही मसाइब की रात गुज़र जाती है

सुबुकदोशी	रिटायर मेंट
असरी	दुन्या की
फायज़ करना	नियुक्त करना
रब्त	संबंध
तक़ाबुल	काम्पिटीशन
फ़नेसखुन	शायरी
जिलादेना	चमकादेना, तरक्की देना
नविश्ता दीवार	दीवार पर लिखा हुआ
तआस्सुर	असर, परिणाम
अक्स छोडना	असर छोडना
विर्सा	बाप दादा से मिली हूई
महजूज़ करना	खुश करना
अय्याम	दिन
फ़िलबदीह	फौरन, उसी वक़्त
दाद देना	शेअर सुनकर तारीफ़ करना
बायसे बरकत	बरकत का जरिया
मजाहेरे कुदरत	कुदरत की निशानियाँ
ख़ालेक़	पैदा करने वाला
मुहसिने इन्सानियत	इन्सानियत के मुहसिन एहसान करने वाले पैग़मबर हज़रत मुहम्मद (स.अ.स.)

अभिप्राय

मौ. मु. अय्युब साहब कास्मी

बामे उरुज पर	तरक़्की पर
तखय्युलाती पहलू	वह पहलू जिसमें सोच समझकर अपने दिली ख़्यालात को अच्छे ढंग मे पेश किया जाए
माफ़ीउज़्जमीर का अदा करना	दिली जज़बात व ख़्यालात को ज़ाहेर करना
हजो	अपमान
मदह	तआरीफ़
मुख़्तलिफ़ ज़ाविए	अलग अलग ढंग
शायराना तख़य्युल	शायराना सोचने का ढंग, अदाज़
विजदानी कैफ़ियत	जो कैफ़ियात वज़जबात और नज़रिआत उसमें और उसकी सोसायटी मे पाए जाते हों
मुनहसर	दारोमदार
जंगजुयाना तख़य्युलात	ऐसी शायरी जिसमे जंग और उस माहोल वाली बातें हों
सुफ़ियाना	धार्मिक
मुरक्कबे इम्तेज़ाज	दो अलगअलग चीज़ों का मुरक्कब

अदुवाने हक	हक के दुश्मन
हिदायत	सीधा रास्ता हमेशा की काम्याबी दिलाने वाला रास्ता
बन्दानवाज़ी	बन्दे को नवाज़ना, इनाम देना
सरफ़राज़ी	इनायत, मेहेरबानी
रुह फूंकना	जिंदाकरना
औज़ान	वजन की जमा
रदीफ़ व काफ़िया	शेअर के दो भाग
मुहिब्बेवतन	देश भक्त
शादाँ व फरहाँ	खुश
जूँ	जैसी
वहदत	एकता, एकजहती
एखतेलाफ़	अलग अलग होना मज़हब, ज़बान रंग व नसल का फ़र्क़

आँखे

अतिया	नजराना
कायनात	दुनिया
चष्मे ज़दनमे	थोडी देर मे (पलक झपकने तक)
चष्मे करम	करम की नज़र
रब्बे क़दीर	अल्लाह तआला
जज़बात की आईनादार	जज़बात का इज़हार करने वाली
मुस्तइद	तय्यार
नामूस	इज़्ज़त
तलबगार	चाहनेवाली

सहेर ख़ैजी

सहेर खैज़ी	सुबह जागना
सदा देना	आवाज़ देना

रुबाईयात

रुबाई	दो शेअर वाली कविता
शुक्र	एहसान
बाज़ौक़	ज़ौक वाला, ज़ौक, छंद
बातमीज़	तमीज़ वाला

जिंदगी क्या ही हसीं मालूम होती है
दिल में सुकूँ ख़नदाह जबीं मालूम होती है
शिक्वे हालात क्योंकर करें शाकेर
तेरी रज़ा जब मेरी खुशी मालूम

बन्दे की बन्दा नवाज़ी तूने की है
इस ख़ाकी पर सरफ़राज़ी तूने की है
जिस्म व जाँ देकर रूह फूँकी
दौलते ईमाँ अता तूने की है

अहेले ग़ीबत हायक्या सितम करते हैं
अहेले जहन्नुम में नाम अपना रक़म करते हैं
खुदा व नबी (स.) की डाँट फटकार फिर भी
अपनी हरकात को कहाँ कम करते हैं

शेअर व शाएरी के अवज़ान कहाँ से लाऊँ
रदीफ़ व क़ाफ़िया की मीज़ान कहाँ से लाऊँ
फ़ने अरुज़ लाज़मी और ज़रुरी है मगर
रहेनुमा, मुसलेह मेहेरबान कहाँ से लाऊँ

अख़लाक़ का दामन ना छोडें हरगिज़
येह आदत है अहसन ना छोडें हरगिज़
अदुवाने हक़्क़ ने भी हिदायत पाई
है येह सरकार का मख़ज़ ना छोडें हरगिज़

तिफ़ली देखी और अहदे शबाब देखा है
और वक़्ते पीरी आफ़ताब देखा है
अज़्म व हौसला ने फिर से जवानी बख़्शी
मौला करम तेरा, बेहिसाब देखा है

अद्ल मग़मूम शराफ़त मातम कनाँ है
तेरी मख़्लूक यारब क्यो परेशाँ है
बस एक बात सूरज की तराह है रौशन
आफ़ात में आमाल का परतव अयाँ है

अभिप्राय

मौलवी मु. ज़ुबेरअहमद साहब (B.Sc.,M.A. B.Ed.)

उर्दू दाँ	उर्दू जानने वाले
शेअर फ़हेम अर्ज़ करना	शेअर को समझने वाले
मिज़ाह	विनोद
सखुन	शायरी व अदब
असनाफ़	प्रकार
मर्दुम खैज़	फनकार व लायक लोगों को पैदा करनेवाली धर्ती
वाबस्तगी	तआलुक़
वतनेसानी	दुसरा वतन
इल्म व अदब का गेहवारा	इल्म व अदब का केंद्र, मर्कज़
बहुस्न व खुबी	अच्छी तऱ्हा
वाक़ेफ़	जानने पहचानने वाला
मुलाज़िमत	नौकरी
ज़ातेआली	शख़सियत
क़ारीईन	पढने वाले
सामेईन	सुननेवाले
दादे तहसीन	तारीफ़
पज़ीराई करना	आव भगत करना, सलाहियत को मानना
मोमिनाना फ़ज़ा	इस्लामी माहोल
बुज़ुर्ग हज़रात	पुज्य, बडेलोग
मुआविन	मददगार
अज़्मेजवाँ	पक्का इरादा
आहनी दीवार	मज़बूत दीवार, लोहे की दीवार
इनफ़िरादियत	ऐसी खूबी जो दुसरों में कम देखने को मिलती है
खुदाबीनी	खुदाको पहचानना
खुदाबीनी	खुदको पहचानना
जहाँबीनी	संसार को पहचानना, ज़माने के उतार चढाव
वारेदाते क़लबी	दिल में पैदा होनेवाले ख़्यालात व जज़बात
खुलूस	सच्ची मुहब्बत, प्रेम

गर्दिश मुदाम	लगातार गर्दिश, सदा हरकत में
तस्ख़ीर	फ़तह करना, जीतना
मुब्तदी	सीखने समजने, की अभी इबतेदा है
शऊर	समझ
निगाहे पुरसहेर	जादू भरी निगाह, असर करणे वाली निगाह

हम्दे बारी तूनेभेजे नबीए रहमत (स.) अल्लाहाकी तारीफ़

नबीए रहेमन (स.अ.स.)	हज़रत मोहम्मद (स.अ.स.)
बुरहान	निशानियाँ
फ़िदा होना	दिलो जान से चाहना
अशरफ़	वारिष्ठ, बडा
तौफ़ीक़	निर्णय
अर्ज़	ज़मीन
समां	आकाश, अंबर
लामकान	परलोक
नबी दो आलम (स.अ.स.)	हज़रत मोहम्मद (स.अ.स.)
एनान	बाग डोर
साहेल	सागर का किनारा
रोज़ी रसाँ	रोज़ी पहोंचाने वाला
मुशफ़िक व मेहेरबाँ	अति दयालु
आब	पाणी
आतिश	आग
बाद	हवा
ख़ाक	मिट्टी
मज़हर	निशानीयाँ, प्रतीक, अज़मत व बढाई के निशान
बाद व बाराँ	हवा और बारिश
नूरी	प्रकाश से बनी हुवी (दूत)
नारी	आग से बनी हूई (जिन)
ख़ाकी	मिट्टी से बनी हूई (इन्सान)
फ़रहाँ व शाँदा	खुश, आनंदित
लब्रेज़	भरा हूवा

ग़ज़ल

कई अहलनज़र कई अहले हुनर होते है.

अहेलेनज़र	परखने वाले
अहेलेहुनर	हुनर वाले
शाह	बादेशाह
शाहगर	बादेशाह बनाने वाले
सदफ़	सीपी, शंख
निहाँ	छुपा हुवा
गुहर	मोती
हीच	कमतर, छोटा, मामूली
रिश्ते दर्द	हम दर्दी
फ़रोग देना	बढावा देना
सई पैहम	लगातार
ज़ेर व ज़बर	बर्बाद नाबूद
अज़ीज़	रिश्तेदार
दिल व जिगर	प्यारे
सुर्ख़रु	मशहूर
बामुराद	कामियाब
मुती	आदेश का पालन करने वाले
मंजुरे नज़र	प्यारे, पसंदीदा

ग़ज़ल

बहार व चमन के लैल व नहार मेरे हैं.

लैल व नहार	रात व दिन
आसार	निशानियाँ
बदरे कामेल	चौधवी रात का चाँद
खुर्शीद	सूरज
सहेरा	जंगल
गुलज़ार	चमन
आबेद	इबादत करने वाला
ज़ाहेद	अल्लाह से डरनेवाला
रफ़ीक़	दोस्त, मित्र
गुन्हागार	पापी
दिलनशी बज़्म	सुंदर संसार
संगे राह	रासदे का पत्थर
रहेबर	रास्ता बताने वाला
लायक़े एतेबार	भरोसे के क़ाबिल
ख़ारज़ार	कांटेदार झाडीयाँ
हासिले ज़िस्त	जिंदगी का मक़्सद
रहेमतेकिरदगार	अल्लाह की रहेमत

योमे आज़ादी

योमे आज़ादी	देशकी आज़ादी का दिन (१५ अगस्ट)
नियमुल बदल	अच्छा बदला
मआयब	कमजोरियाँ, कमी
हीचमदाँ	कमतर, नाचीज़
अफ़ादियत	फ़ायदा
तसलीम करना	मानना,
सूदमंद	फ़ायदामंद
मुताला करना	पढना
कुहना मश्क़	पुराने, बहुतज्यादा तजरुबा रखनेवाले
नज़रे सानी	जांचना
बायसे तशक्कुर	शुकरिए के लायक़
तहेदिल सें ममनून	दिलसे शुक्रगुज़ार होना व मशकूर होना

अभिप्राय

मौ. मुईनुद्दीन साहब कासमी, नांदेड.

तख़लीक़ करना	पैदा करना
नसर निगार	नसर लिखनेवाला
आमाले सालेहा	सुकर्म, अच्छे, काम
मुतस्सिफ़	सबंध रखने वाले
गुमराही	सच्चे और सीधे रास्ते से भटकना
सलीमुत तबा	अच्छाई को मान्य करनेवाला, तसलीम करने वाला

मफ़हूम क़ौले बारीत तआला

मजलिस	कमेटी
रुक्न	सभासद
माहेर	स्पेशलिस्ट
मफ़हूम	मतलब
क़ौल	बात
बारीताआला	अल्लाह तआला
बाहमी	आपस के
दुनयवी	दुन्या के
वक़्ती	थोडे वक्त के लिए
मुनाफ़ा	फ़ायदा
ख़ैर	भलाई
सरगोशी	चुपके चुपके बात करना
तरग़ीब देना	मायल करना

अभिप्राय

मौ. मु. अय्युब साहब क़ास्मी

आबेदाना	धार्मिक
सियासी	पोलिटिकल
रुहबानी	सन्यासी
परागंदा माहोल	बुरा माहोल
कुफ़्र	अंधेरा
गामज़न होना	क़दम बढाना, चलना

अभिप्राय

मो. मसउदुर्रहमान फारुकी साहब पालनपुरी मुक़ीम हिंगोली.

जस्ता जस्ता	थोडा थोडा
नुमायाँ	ज़ाहेर

अभिप्राय

मौ. अ. वाहेद साहब कास्मी -

सालेह	नेक, अच्छा
इस्लाह	दुरुस्ती
मआशेरा	लोक, सोसायटी
तुर्क़	तरीके
अदबी ज़ौक	अदब से लगाव
बिसात	हैसियत
मखफ़ी	छुपी हूई
पैग़ाम	संदेसा
काविश	कोशिश

अभिप्राय

मो. मुफ़्ती मु. युसुफ़ साहेब क़ासमी

दआवती मज़हब	अछाई की और बुलानेवाला धर्म
मुतर्जमीने इसलाम	इस्लाम धर्म के उसूलो और आदेशो को समझाने और आम करने वाले
नय्यरे ताबाँ	रोशन सूरज
खुदादाद	खुदा की दी हूई
उम्मते मुसलिमा	इस्लाम धर्म को माननेवाले
अज़ीम तरीन हसतियाँ	बहुत बडे लोक
आफ़ाकी पैग़ाम	सब संसार के लिए पैग़ाम
सिलसिला	ज़न्ज़ीर
ज़हब	सोना

मुतफ़र्रिक अशआर

अशआर	कविताके, पंकतियाँ
तारतार होना	टुकडे टुकडे होना
ख़ार	काटे
शर्मसार	शर्मिंदा
बाहया	शर्मवाली
नाखुदा	मल्हार, कश्ती चलानेवाला
हज़रते खि़ज़र	अल्लाह के वली जो रास्ते से भटके हूए लोगों को रास्ताबताने वाले
एहासे ज़ियाँ	नुक़्सान का एहसास
ख़ता	ग़ल्ती
क़ज़ाहोना	छूटजाना
रब्बेग़फ़ूर	क्षमाकरने वाला अल्लाह तआला
दोतिहाई	तिसरा हिस्सा, भाग
आसारे सहर	सवेरे के आसार, निशानियाँ
कूचनक़्क़ारा	कारवाँ की रवानगी के समय जो बिगुल बजाया जाता है.
एनाने मौत वज़ीस्त	जिंदगी और मौत का एख़्त्यार
दुआ मक़्बूल होना	दुआ क़ुबूल होना
रतबुल लिसाँ	यादमे
मजूसी	पारसी
नूरेखै़रुलबशर	दाढी
अलताफ़ व इनायात	अल्लाह की मेहरबानियाँ
बार	वज़न
मतलूब	चाहिए
ख़ूब	अच्छा
कैफ़	मज़ा
जिंदगी का ऐश	जिंदगी के मज़े
लम्हे निशात	ख़ुशी की घडी
गुल	फूल
सिबात	ठैराव
इन्क़लाब	परिवर्तन

शबनम

तख़्लीक़ात	अल्लाह की बनाई हुई चीज़ें
मोहतरम	पुज्य
आरेज़	गाल
सुर्ख़गुल	लाल कलर का फूल, गुलाब
वुज़ु	नमाज़ (प्रार्थना) से पहले जो हात पावँ धोए जाते हैं.
ज़िक्र ख़ालेक का करना	निर्माता यानी अल्लाह को याद करना
सजदा रेज़ होना	सजदा मे जाना या माथा व नाक ज़मीन पर रखना
क़्याम करना	खडा होना
अहले गुलिस्ताँ	चमन वाले
फ़ने अरूज़	शायरी का फ़न
लाज़मी	बहूतजरुरी
मुस्लेह	इस्लाह करने वाला, दुरुस्त करने वाला
तिफली	बचपन, बालपाण
अहदे शबाब	जवानी का ज़माना
पीरी	बुढापा
आफ़ताब	सूरज
हौसला	हिम्मत
मौला	अल्लाह
अद्ल	न्याय
मग़मूम	रंजीदा
शराफ़त	सभ्यता
सूरज की तरहा रोशन	खुली हुई
आफ़ात	मुसीबत
आमाल	अपने अच्छे बुरे अमल
परतव	छाया
अयाँ	ज़ाहेर, खुला हूआ
बहर	सागर
बर	धरती
शाह व गदा	राजा व भिकारी
हीच	मामूली, हक़ीर, छोटा
गुरु तकब्बूर	घमंड
फ़र्ज	जिम्मेदारी
शोहर	पती
खुदाए बरतर	अल्लाह तआला
ज़ीनत	रौनक़
शाख़ेगुल	फूल की डाली
शेवैमोमिन	मोमिन के अख़लाक़
राज़ी ब रज़ा रहना	हर हाल मे राज़ी रहेना शिकवा व शिकायत न करना
मसायब	मुसीबतें
अहले ग़ीबत	गीबत, चुगली चाली करने वाले
जहन्नूम	दोजख, नरक
रक़म करना	लिखना
अहसन	अच्छी

माँ की अज़मत

परवरिशव परदाख़्त	पालन पोषण
आग़ोश	गोद
मुतबादल	बदल
मसीहा	डॉक्टर
दर्द व आज़ार	तकलीफ
मुस्क़बिल	भविष्य
ख़ैरख़ा	भलाई चाहने वाली
फ़लाह	भलाई
शादाबी	सरसब्जी
दरख़्शाँ	रोशन
अख़लाक़	सभ्यता
मल्जा व मावा	ठिकाना
मुख़ातिब करना	मुतवज्जेकरना
मुहिम	बडाकाम
फ़रमानेरब्बी	अल्लाह का हुकुम
फ़रमाने नबी स.अ.स.	नबी (स.अ.स.) का फ़रमान
तरजीह	ज़्यादा अहमियत देना
इताब	ग़ुस्सा, कुरोध
सुर्ख़रू	कामियाब, मशहूर
नामुराद	नाकाम
फ़ैसल	फ़ैसला करनेवाली
पनाह	हिफ़ाज़त
मदाहखाँ	तारीफ़ करने वाले,
सना खाँ	तारीफ़ करने वाले
महेरुम	नामुराद

चाँद

माहेताबाँ	रोशन चाँद
परतवे खुर्शीद	सुरज की छाया (रोशनी)
मुस्तआर	उधार
महेजबी	सुंदर, चाँद की तऱ्ह रोशन
गिरवीदाह दाहा होना	चाहना, प्रेम करना
शैदा	आशिक
हुस्ने अज़ल	अल्लाह तआला
तख़लीक़	तय्यार करदाह, पैदा की गई
मोजेज़ा	करिष्मा
मोजेज़ा शक्कुल क़मर	हज़रत मुहम्मद (स.अ.स.) ने अल्लाह तआला के हूक्म से चाँद के दो टुकडे करदिय थे
तफ़सीर	सराहत
शबेतीर वतार	अंधेरीरात
क़ैसर	राजा
हिलाल	पहली तारीख़ का चाँद
सायम	रोज़ादार
नग़मै मुहब्बत	प्रेम का गीत

दिल जलाव केह रोशनी होगी

आफ़रीं	क़ाबिले तआशिफ़
साने	निर्माण करने वाला

दिलजलाओ केह रोशनी होगी

रब्बेक़दीर	अल्लाह तआला
बख़्शवाना	क्षमा करवाना, स्वर्गका हकदार बनाना
शाहेउमम	हज़रत मुहम्मद (स.अ.स.)
आज़ा	शरीर के भाग
अयाँ	जाहेर, खुला हुआ
रक़्स	नाच
ऐशख़ाने	जहाँ शराब व कबाब डांस और पाप होते है
तंबीहे रब	रब की डाँट, बुरे काम से रुकने के लिए ख़बरदार करना

माँ की अज़मत

परवरिशव परदाख़्त	पालन पोषण
आग़ोश	गोद
मुतबादल	बदल
मसीहा	डॉक्टर
दर्द व आज़ार	तकलीफ, बीमारियाँ
मुस्तकाबल	भविष्य
खैरख़ाह	भलाई चाहने वाली
फ़लाह	भलाई
शादाबी	सरसब्जी
दरख़्शाँ	रोशन
अख़लाक़	सभ्यता
मल्जा व मावा	ठिकाना
मुख़ातिब करना	मुतवज्जेकरना, बात करना
मुहिम	बडाकाम
फरमानेरब्बी	अल्लाह का हुकूम
फ़रमाने नबी स.अ.स.	नबी (स.अ.स.) का फ़रमान
तरजीह देना	ज़्यादा पसंद करना
इताब	गुस्सा, कुरोध
सुर्खरु	कामियाब
नामुराद	नाकाम
फैसल	फैसला करनेवाली
पनाह	हिफ़ाज़त
मदाहखाँ	तारीफ़ करने वाले
सना खाँ	तारीफ करने वाले
महेरुम	नामुराद

गज़ल १२

बर्क	बिजली
चष्मकज़मी	बिजली का बार बार चमकना
हिजाब	पर्दा
वजूद	हस्ती
पारे सिमाब	पारे का टुकडा
बज़्म	महेफिल
तबस्सुमरेज़	मुसकराहट बिखेरने वाली
शीरींकलाम्याँ	दिलको लुभाने वाली बात चीत
ख़िताब	बयान
महेव	मगन
खुशअदाई	आकर्शक अदाकरी
शजर	पेड, झाड
हसीं	सुंदर
गुमान	ख़्याल
दहन	मूँह

गज़ल ८

लैल व नहार	रात व दिन
आसार	निशानियाँ
बदरे कामील	चौधवी रात का चाँद
खुर्शीद.	सुरज
सहेरा	जंगल
गुलज़ार	चमन
आबेद	इबादत करने वाला
ज़ाहेद	अल्लाह से डरने वाला
रफ़ीख	दोस्त, मित्र
गुन्हागार	पापी
दिलनशींबज़्म	सुंदर संसार
संगे राह	रासते का पत्थर
रहेबर	रास्ता बत्ताने वाला
लायके ऐतेबार	भरोसे के काबिल
खारज़ार	कांटेदार झाडीयाँ
हासीले जिस्त	जिंदगी का मक़्सद
रहेमते किरदगार	अल्लाह की रहेमत